ISSN 2349-6614

मार्च 2022

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

सागर में विलीन हुई

सुरों की गंगा

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 19 अंक 11, Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2021-23 Posting Date: 27th-28th of Every Month RNI No. RAJHIN/2003/9297 Posting Office: Chetak Circle, Udaipur

Siddharth Singhvi
+91-99289 10551

P.B QUARRIES

MUMAL GROUP

Galaxy EXPORTS

Quarry, Marble, Granite, Quartzite

Mumal Marbles Pvt. Ltd.

Quarry Owner of Forest Green, Blue Fanatay, Arctic Quartz, Ruby Red & Antico Bianco

N.H. 8, Village Amberi, Udaipur, Rajasthan (Raj.) India Resi: +91-294-2451180-81-82
Email: singhvi7@gmail.com sales@mumalmarble.com
Web: www.mumalmarble.com www.galaxyexportsudr.com
Wechat id: Siddarthgalaxy

शिवरात्रि एवं होली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

मार्च 2022 वर्ष 19, अंक 11

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर
मदन, भूमिका, उषा
चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

कम्प्यूटर ग्राफिक्स Supreme Designs
विकास सुहालका

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डागी
कुलदीप इन्दौरा, कृष्णकुमार हरितवाल
धीरज गुर्जर, अभय जैन
लालसिंह झाला, ओम शर्मा
अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुंदरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

स्वास्थ्य

चिंता से पनपते हैं कई रोग
10

सुरक्षा

रक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता पर बल
14

घरेलू उपचार
कई बीमारियों की औषधि है धनिया
22

बागवानी

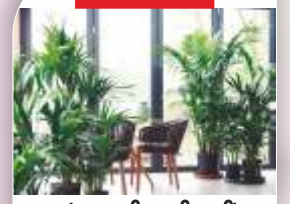

सुंदर सजीला ही नहीं हरा-भरा भी है पाम
34

बालवाड़ी

हठी न बन जाए आपका बच्चा
36

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्सः 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोगाइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

आकाश वागरेचा

मो :- 94141-69241

EVEREST GROUP OF COMPANIES
SINCE 1963

एवरेस्ट ग्रुप ऑफ कम्पनीज

शुभलक्ष्मी बिल्डकॉन प्रा. लि.

सावा सर्जिकल प्रा. लि.

एवरेस्ट नेचुरो हर्ब प्रा. लि.

एवरेस्ट इंटरनेशनल होटल एंड रेस्टोरेंट

एवरेस्ट आशियाना बिजनेस प्रा. लि.

169-ओ रोड, भूपालपुरा, उदयपुर (राज.)

नि:शब्द स्वर कोकिला

'**भारत** रत्न' स्वर कोकिला लता मंगेशकर ने 92 वर्ष का ऐसा सुंदर और सार्थक जीवन जिया, जिसका लम्हा-लम्हा सुरों से सजा था। लगभग पांच पीढ़ियों ने उन्हें मंत्रमुग्ध होकर सुना और आने वाली पीढ़ियां भी सुनती रहेंगी, उनकी आवाज के जादू का कोई सानी नहीं था। लताजी ने जैसी ख्याति, लोकप्रियता और सम्मान पार्श्व संगीत के क्षेत्र में अर्जित किया, वैसा शायद दुनिया में किसी और ने नहीं किया। उन्हें सरस्वती का अवतार भी कहा गया। बसंत पंचमी को माता सरस्वती की पूजा के अगले दिन जब सरस्वती की प्रतिमाएं विसर्जन को चलीं तो उनमें एक देह लताजी की भी थी। कभी जिक्र आया भी कि क्या उन्हें सरस्वती का आशीर्वाद ज्यादा मिला तो वे बोली 'मुझे नहीं लगता कि जितना मैं कर पाई हूं या जितना सम्मान लोग मुझे देते हैं, मैं उसके लायक भी हूं। ये सब माता-पिता के आशीष और लोगों के प्रेम की वजह से है।'

गोवा के मूल निवासी ब्राह्मण परिवार में मराठी पिता और गुजराती माता की इस अलौकिक संतान का जन्म मध्यप्रदेश के इंदौर में 28 सितम्बर 1929 को हुआ। लेकिन परवरिश महाराष्ट्र में हुई। संगीतकार पिता दीनानाथ मंगेशकर भी हैरान हुए थे, जब उन्होंने लता को पहली बार गुनगुनाते सुना। वे किसी को संगीत शिक्षा दे रहे थे, लता ओट में खड़ी सुन रही थी और फिर उस मुखड़े को गुनगुना दिया था। इसके बाद पिता को उसमें छिपी प्रतिमा का आभास हुआ और उसे संगीत की शिक्षा देनी शुरू की। सन 42 में पिता का देहांत हो गया। इस समय पांच भाई-बहिनों में सबसे बड़ी लता की उम्र सिर्फ 13 वर्ष थी। परिवार की जिम्मेदारी का सारा बोझ उनके कंधों पर आ पड़ा। इसी उम्र में उन्हें परिवार चलाने के लिए न चाहते हुए भी कुछ फिल्मों में काम करना पड़ा। दूसरी ओर उन्हें गायकी क्षेत्र में कॅरियर की तलाश थी। यह वह समय था जब पार्श्वगायन के क्षेत्र में नूरजहां, अमीर बाई, शमशाद बेगम, राजकुमारी आदि का बड़ा नाम था और कोई भी फिल्म निर्माता इनके अलावा किसी ओर नाम के बारे में सोचना भी नहीं चाहता था।

1945 में लताजी ने बसंत जोगलेकर की मराठी फिल्म 'कीर्ति हसाल' के लिए गाया, लेकिन कुछ कारणों से वह गाना रिलीज नहीं हो पाया। संघर्ष के इन दिनों के दौरान ही 1949 में लताजी को जिस लम्हें की तलाश थी, वह मिल गया। फिल्म 'महल' में गाए गीत 'आएगा आने वाला' ने उन्हें रातों-रात फर्श से अर्श पर स्थापित कर दिया और उसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। सभी भाई-बहिनों आशा, उषा, मीना और हृदयनाथ की बेहतर परवरिश कर उन्हें भी गायकी और संगीत के क्षेत्र में नामचीन हस्ती बना दिया। निर्विवाद रूप से अद्भुत शब्द ही लता मंगेशकर की अविश्वसनीय प्रतिभा को उपयुक्त रूप से परिभाषित कर सकता है। उनकी आवाज के रेशे रेशम की तरह ऐसे कोमल, नरम और चमकदार थे कि कोई भी गीत उनसे लिपट कर जीवंत हो उठता था। यही वजह थी कि तीस से अधिक भाषाओं में उन्होंने हजारों गीत गाए और हर भाषा में उनका वही प्रभाव बना रहा। उनका उच्चारण और लहजा इतना स्पष्ट और सधा हुआ रहा कि गीत की आत्मा कहीं से भी खंडित नहीं होने पाई। उनके नाम कई कीर्तिमान दर्ज हैं, तो बहुत सारे सम्मान उनके नाम से जुड़कर खुद धन्य हो गए।

1962 में चीन के साथ हुए युद्ध में लताजी द्वारा गाया गीत 'ए मेरे वतन के लोगों....' आज भी लोगों की आंखों को नम कर देता है। कपिल देव की कप्तानी वाली भारतीय क्रिकेट टीम ने जब लॉर्ड्स के मैदान पर 1982 में पहली बार विश्वकप जीता था, तब बीसीसीआई के तत्कालीन अध्यक्ष एवं केन्द्रीय मंत्री एनकेपी साल्वे के सामने यक्ष प्रश्न था कि इस जीत का महोत्सव मनाने के लिए धन कहां से आएगा? उस समय भारतीय क्रिकेट दुनिया की महाशक्ति नहीं बना था और न ही उसके फण्ड में आज की तरह पैसा जमा था। साल्वे ने लताजी के मित्र और क्रिकेट जगत की बड़ी हस्ती राजसिंह डूंगरपुर से सम्पर्क कर लता जी का जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में संगीत कार्यक्रम आयोजित करवाया। लताजी खुद भी क्रिकेट की बड़ी दीवानी थीं। बीसीसीआई ने उस कार्यक्रम में काफी पैसा एकत्रित किया। जिससे विजयी टीम के प्रत्येक खिलाड़ी को पुरस्कार स्वरूप एक-एक लाख रुपया दिया जा सका। लताजी का राजस्थान से भी गहरा नाता रहा है। करीब 34 वर्ष पूर्व प्रदेश में पड़े भीषण अकाल से पीड़ितों की मदद के लिए 26 नवम्बर 1987 को लताजी ने पहली बार जयपुर के एसएमएस स्टेडियम में परफॉर्म किया था। जिससे एकत्रित एक करोड़ एक लाख रुपए का चेक तत्कालीन मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी को उन्होंने सौंपा था। लताजी अपनी अंतिम राजस्थान यात्रा पर सन 2002 अप्रेल में उदयपुर पधारीं, जब उन्हें महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन का प्रतिष्ठित हकीम खां सूर पुरस्कार प्रदान किया गया। लताजी का संगीत के क्षेत्र में अवदान अब व्यापक अर्थों में शोध का विषय है। उनके जीवन का हर संघर्ष, पहलू और योगदान आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा। दुनियाभर से उनके निधन पर आए शोक संदेश बताते हैं कि उनकी लोकप्रियता ने बहुत पहले ही भारत की सरहदें लांघ ली थी। अपने जीवन संघर्ष, सादगी और गायकी से भारतीयता का दुनियाभर में परचम बुलंद करने वाली महान लताजी को प्रणाम।

रहें न रहें हम, महका करेंगे...

विवेक अग्रवाल

देश के संगीत जगत की सबसे बड़ी हस्तियों में शुमार और स्वर कोकिला के नाम से जानी जाने वाली 'भारत रत्न' लता मंगेशकर सशरीर भले ही आज हमारे बीच न हों, लेकिन अपने सुरीले गीतों के जरिए संगीत प्रेमियों के दिलों में सदा अमर रहेंगी। लता दीदी कभी विदा ले ही नहीं सकती। जीवन के हर पड़ाव में अपने गाए गीतों से वह हमारे साथ हमेशा रहेंगी।

इंदौर में जन्मी लताजी ने मराठी फिल्म 'किर्ती हसाल' के लिए मात्र 13 वर्ष की आयु में 1942 में अपना पहला गीत रिकॉर्ड किया था। इसके 79 वर्ष बाद पिछले साल अक्टूबर में विशाल भारद्वाज ने मंगेशकर का गाया 'ठीक नहीं लगता' गीत जारी किया था। इस गीत के बोल गुलजार ने लिखे हैं मंगेशकर ने इस गीत के जारी होने के कुछ दिन बाद एक साक्षात्कार में कहा था 'यह लंबी यात्रा मेरे साथ है और वह छोटी बच्ची अब भी मेरे अंदर है। वह कहीं गई नहीं है। कुछ लोग मुझे 'सरस्वती' कहते हैं या वे कहते हैं कि मुझ पर उनकी कृपा है। यह उनका आशीर्वाद है कि मेरे गाए गीत लोगों को पसंद आते हैं, अन्यथा में कौन हूं ? मैं कुछ नहीं हूं।

कहा जाता है कि लता मंगेशकर ने 1963 में पूर्व प्रधानमंत्री दिवंगत जवाहरलाल नेहरू की मौजूदगी में जब देश के जवानों के लिए 'ऐ मेरे वतन के लोगों' गीत गाया था, तो नेहरू अपने आंसू नहीं रोक पाए थे। मंगेशकर ने मोहे पनघट पे (मुगल-ए-आजम) जैसे शास्त्रीय गीतों , 'अजीब दास्तां हैं ये' (दिल अपना और प्रीत पराई) और 'बांहों में चले आओ' (अनामिका) जैसे रोमांटिक गीतों से सुरों का जादू बिखेरा। उन्हें भारत के सबसे बड़े नागरिक सम्मान 'भारत रत्न', दादा साहेब फाल्के पुरस्कार और कई अन्य पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। वह आजीवन अविवाहित रहीं। ऐसा कहा जाता था कि क्रिकेट राजसिंह डूंगरपुर और मंगेशकर एक-दूसरे से प्रेम करते थे। राजसिंह ने इसे लेकर बात की, लेकिन मंगेशकर ने इस विषय पर कभी कुछ नहीं कहा। अपनी बहन आशा भोसले के साथ कथित प्रतिद्वंद्वता को लेकर भी मंगेशकर कई बार सुर्खियों में रहीं, लेकिन उन्होंने इस बात की कभी परवाह नहीं की और कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया। इसके अलावा रॉयल्टी को लेकर गायक मोहम्मद रफी के साथ उनका मतभेद और अभिनेता राजकपूर के साथ उनका विवाद भी चर्चा में रहा।

लताजी का जन्म 28 सितम्बर 1929 को एक मराठी संगीतकार पंडित दीनानाथ मंगेशकर और गुजराती गृहिणी शेवंती के घर हुआ था। वह दीनानाथ और शेवंती के पांच बच्चों में सबसे बड़ी थीं। लता के अलावा मीना, आशा, उषा और हृदयनाथ उनके बच्चे थे। दीनानाथ मंगेशकर के अचानक निधन के कारण परिवार का आर्थिक बोझ 13 वर्षीय लता के कंधों पर आ गया। जब वह मुंबई गई तो निर्माता एस. मुखर्जी ने यह कहकर मंगेशकर को खारिज कर दिया था कि उनकी आवाज बहुत पतली है।

लता मंगेशकर ने जब 1949 में फिल्म महल के लिए 'आएगा आने वाला' गीत गाया, उस समय पार्श्व गायकों को अधिक तवज्जों नहीं दी जाती थीं, लेकिन श्रोताओं की मांग पर रेडियो को एचएमवी की अनुमति से लता मंगेशकर का नाम सार्वजनिक करना पड़ा था। मंगेशकर ने नसरीन मुन्नी कबीर के वृत्तचित्र 'लता मंगेशकर: इन हर ओन वर्ड्स' में इस बात का जिक्र किया था। रेडियो स्टेशन ने श्रोताओं को बताया कि यह गीत मंगेशकर ने गाया है और

तिरंगे में आखिरी सफर

शाम को सेना के जवान उनके पार्थिव शरीर को तिरंगे में लपेटकर घर से बाहर लाए। आर्मी, नेवी, एयरफोर्स और महाराष्ट्र पुलिस के जवानों ने उनकी अर्थी को कंधा दिया। उनका पार्थिव शरीर फूलों से सजे सेना के ट्रक में रखकर शिवाजी पार्क ले जाया गया। मुंबई और देशभर से आए हजारों लोग लता ताई को अंतिम विदाई देने सड़कों पर उतर आए। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे और केन्द्रीय मंत्रियों समेत कई हस्तियों ने उन्हें अंतिम विदाई दी।

आखिरी पलों में पिता के गाने सुने

लताजी के जीवन पर किताब लिखने वाले हरीश भिमानी को लताजी के भाई हृदयनाथ मंगेशकर ने बताया कि वह अपने अंतिम दिनों में पिता दीनानाथ मंगेशकर को याद कर रही थीं, जो एक नाट्य गायक थे। लताजी अपने पिता की रिकॉर्डिंग मंगवाकर उन्हें सुन रही थीं और उसे गाने की कोशिश भी करती थीं। अस्पताल में ईयरफोन मंगवाया था। वह मास्क हटाकर गुनगुनाती भी थीं। वे 8 जनवरी से अस्पताल में भर्ती थीं।

इसी के साथ फिल्मों में गायकों को नाम मिलना शुरू हो गया।

मंगेशकर ने 1950 के दशक में शंकर जयकिशन, नौशाद अली, एसडी बर्मन, हेमंतकुमार और मदन मोहन जैसे महान संगीतकारों के साथ काम किया। साठ के दशक में एक बार फिर मधुबाला मंगेशकर की आवाज का चेहरा बनीं। मंगेशकर ने 'मुगल-ए-आजम' के लिए 'जब प्यार किया तो डरना क्या' गीत गाकर संगीत जगत में तहलका मचा दिया। मंगेशकर ने मुकेश, मन्ना डे, महेन्द्र कपूर, मोहम्मद रफी और किशोरकुमार जैसे दिग्गज गायकों के साथ युगल गीत गाए। सत्तर के दशक में मंगेशकर ने अभिनेत्री मीना कुमारी की आखिरी फिल्म 'पाकीजा' और 'अभिमान' के लिए बेहतरीन गीत गाए।

उन्होंने 80 के दशक में सिलसिला, चांदनी, मैंने प्यार किया, एक दूजे के लिए, प्रेम रोग, राम तेरी गंगा मैली और मासूम फिल्मों के लिए गीत गाए। वर्ष 1990 और 2000 के दशक में उन्होंने गुलजार निर्देशित फिल्म लेकिन और यश चोपड़ा की फिल्मों लम्हे, डर, दिलवाले दुल्हनियां ले जाएंगे और दिल तो पागल है के गीतों को अपनी सुरीली आवाज दी। उन्होंने आखिरी बार 2004 में 'वीर-जारा' फिल्म के लिए गीत गाए। मंगेशकर ने 1977 में किनारा फिल्म के लिए मेरी आवाज ही मेरी पहचान है गीत गाया था और वाकई आज उनकी आवाज किसी पहचान की मोहताज नहीं।

कोरोना संक्रमण की चपेट में आने के बाद 28 दिन तक मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में उनका इलाज चला। 6 फरवरी सुबह आठ बजकर 12 मिनट पर उन्होंने अंतिम सास ली। अस्पताल के डॉक्टर प्रतीत समदानी के अनुसार उनके कई अंगों ने काम करना बंद कर दिया था। दो दिन के राष्ट्रीय शोक की घोषणा की गई। शाम को पार्थिव शरीर का मुंबई के शिवाजी पार्क में राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। भाई हृदयनाथ मंगेशकर ने उन्हें मुखाग्नि दी। इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी समेत राजनीति और फिल्म जगत की तमाम हस्तियां मौजूद थी। इससे पहले लता जी की पार्थिव देह दोपहर ब्रीच कैंडी अस्पताल से पेडर रोड स्थित उनके घर प्रभुकुंज पहुंची, जहां हजारों की संख्या में लोगों ने उनके अंतिम दर्शन किए।

सफरनामा पुरस्कार और सम्मान

1962 *में सर्वश्रेष्ठ गायिका का दूसरा, 1965 में तीसरा, 1969 में चौथा, 1993 में पांचवा और 1994 में छठा फिल्मफेयर अवार्ड जीता, भविष्य में यह पुरस्कार ग्रहण न करने की घोषणा की।*

1969 *में पद्म भूषण और 1999 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया।*

1972, *1975 और 1990 में तीन बार सर्वश्रेष्ठ गायिका का राष्ट्रीय पुरस्कार अपने नाम किया।*

1984 *में मध्यप्रदेश सरकार ने लता जी के सम्मान में लता मंगेशकर पुरस्कार की शुरुआत की, 1992 में महाराष्ट्र सरकार ने भी एक पुरस्कार का आगाज किया।*

1989 *में फिल्मों के सर्वोच्च सम्मान दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित हुई।*

1993 *में लता ने फिल्मफेयर का लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार हासिल किया।*

1997 *में संगीत जगत में उल्लेखनीय योगदान के लिए महाराष्ट्र भूषण अवार्ड दिया गया*

1999 *में एनटीआर अवार्ड और जी सिने लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार से सम्मानित हुईं।*

2001 *में केन्द्र सरकार ने देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से नवाजा।*

स्वरों की यह साम्राज्ञी अर्श पर रहकर भी सहज और सरल थीं। वे 14 अप्रेल 2002 उदयपुर आई थीं। सिटी पैलेस में महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन ने उन्हें हकीम खां सूर अलंकरण से नवाजा था। कुछ अलंकरण ऐसे होते हैं, जिन्हें पाने वाले से ज्यादा देने पर गौरव की अनुभूति होती है। लता जी का यह अलंकरण स्वीकार करना भी कुछ ऐसा ही पल था। सम्मान ग्रहण करने के बाद संक्षिप्त संबोधन से लताजी ने पूरे मेवाड़ का दिल जीत लिया। उन्होंने कहा था कि हकीम खां सूर अजेय योद्धा थे और उनके नाम का यह सर्वोच्च अलंकरण लेते हुए मैं आज वीरभूमि मेवाड़ पर अपने आपको सौभाग्यशाली मानती हूं... । इस बात से उन्होंने गाहे-बगाहे ही बता दिया कि सिर्फ उम्र या बड़ी सफलता महान होने का पैमाना नहीं है। पूरे समारोह में लताजी का सहज-सरल स्वभाव दिखा। वे अपने से हर छोटे-बड़े का अभिवादन करती रहीं।

हमेशा दिलों में रहेंगी

लता दीदी जैसा कलाकार सदियों में पैदा होता है। वह असाधारण और उच्च कोटि के व्यवहार की धनी थीं। यह दिव्य आवाज सदा के लिए बंद हो गई। लेकिन उनके गाए गीत अनंतकाल तक गूंजते रहेंगे।

रामनाथ कोविंद, राष्ट्रपति

मैं अपना दुख शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। दयालु और सबकी परवाह करने वाली लता दीदी हमें छोड़कर चली गई। उनके निधन से देश में एक खालीपन पैदा हो गया है, जिसे भरा नहीं जा सकता।

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

एक युग का अंत हो गया। लताजी की दिल को छू लेने वाली आवाज, देशभक्ति के गीत और संघर्षपूर्ण जीवन पीढ़ियों के लिए प्रेरणा रहेगा। नमन व भावभीनी श्रद्धांजलि।

सोनिया गांधी, *अध्यक्ष, अखिल भारतीय कांग्रेस*

भारत रत्न लता मंगेशकर जी ने अपने समृद्ध स्वरों से संगीत को नई ऊंचाइयां दीं। भाषा के बंधन को तोड़ उनके गाए गीत विश्व के प्रत्येक हिस्से तक पहुंचे। उनका निधन संपूर्ण राष्ट्र के लिए अपूरणीय क्षति है।

ओम बिरला, *लोकसभा अध्यक्ष*

सुर व संगीत की पूरक लता दीदी ने अपनी सुर साधना व मंत्रमुग्ध कर देने वाली वाणी से न सिर्फ भारत, बल्कि पूरे विश्व में हर पीढ़ी के जीवन को भारतीय संगीत की मिठास से सराबोर किया।

अमित शाह, केन्द्रीय गृहमंत्री

लता मंगेशकर जी के जाने से प्रत्येक भारतीय के मन में जो वेदना और रिक्तता उत्पन्न हुई है, उसका शब्दों में वर्णन करना कठिन है। अपनी स्वर वर्षा से भारतीयों को तृप्त करने वाला आनंद धन हमने खो दिया।

मोहन भागवत, सरसंघसंचालक

उनकी आवाज कई दशकों तक भारत में सबसे प्रिय रही। उनकी सुरीली आवाज अमर है। उनके परिवार, दोस्तों और प्रशंसकों के प्रति मेरी संवेदनाएं।

राहुल गांधी, कांग्रेस नेता

मेरे प्रति उनका बहुत स्नेह था। वे पूरे देश के दिलों पर राज करने वाली शख्सियत थीं। वे हमारे बीच से चली गई, पूरा देश गमगीन है। ऐसे बिरले व्यक्ति दुनिया के अंदर यदा-कदा ही आतें हैं।

अशोक गहलोत, सीएम

लता मंगेशकर ने संगीत साधना से हर हिन्दुस्तानी के दिल में जगह बनाई थी। उन्होंने सात दशकों तक हजारों गानों के माध्यम से सुरीली आवाज का जादू अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बिखेरा।

वसुंधरा राजे, पूर्व सीएम

प्रत्यूष

महिला सशक्तिकरण और समाज

आजादी के साढ़े सात दशक बाद जिस तरह देश में शिक्षा, स्वास्थ्य, औद्योगिकीकरण, रोजगार, कृषि के क्षेत्र में प्रगति के साथ ही समाज में सामाजिक-राजनीतिक चेतना विकसित हो रही है। उसके सापेक्ष महिलाओं की स्थिति उतनी संतोषप्रद नहीं दिखाई देती। हालांकि कुछ दशकों से महिलाओं की शैक्षिक स्थिति और विविध क्षेत्रों में उनके योगदान में सुधार आया है, लेकिन फिर भी साक्षरता का फीसद पुरुषों की तुलना में कम ही है।

चन्द्रशेखर तिवारी

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस विशेष

भारतीय संस्कृति में नारी को सम्मानजनक स्थान देने की परंपरा प्राचीन काल से चली आई है। हमारे वैदिक शास्त्रों में कहा गया है-यत्र नार्यस्तु पूजयंते, रमयंते तत्र देवता। हिंदू सनातम धर्म में भी दुर्गा को जगत का पालन करने, उसका कल्याण करने और दुष्टों का संहार करने की अधिष्ठात्री देवी माना गया है। गार्गी, सावित्री, सीता, कौशल्या और कुंती जैसी अनेक विदुषी नारियों के व्यक्तित्व, त्याग और साहस की गाथाएं आज भी समाज में प्रचलित हैं। भारतीय समाज के विभिन्न कालखंडों पर यदि नजर डालें तो पाते हैं कि वैदिक काल में महिलाओं को कुटुंब समाज में पर्याप्त सम्मान प्राप्त था। तत्कालीन समाज में यह धारणा विद्यमान थी कि नारी के बगैर पुरुष को धर्म-कर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती। उत्तर वैदिक काल आने तक महिलाओं की इस उन्नत स्थिति में आंशिक गिरावट आने लगी। सामाजिक स्तर पर उन पर कुछ पाबंदियां लगाई जाने लगी। इसी दौर में बाल विवाह की परम्परा भी शुरू हो गई थी। हालांकि उस समय महिलाओं की स्थिति ज्यादा सोचनीय नहीं थी। वैदिक युग के बाद ग्यारहवीं सदी के पूर्वार्द्ध तक नारियों की स्थिति धीरे-धीरे कमजोर होने लगी। मध्यकालीन युग में नारियों की दशा दयनीय स्थिति में पहुंच चुकी थी। समाज में पर्दा प्रथा शुरू हो गई थी। महिलाओं की आर्थिक पराधीनता, कुलीन विवाह प्रथा और अशिक्षा आदि के कारण समाज में उनकी स्थिति सोचनीय स्तर पर पहुंचने लगी। वर्तमान में अगर बात करें तो महिलाओं की स्थिति को स्वतंत्रता से पूर्व और स्वतंत्रता के बाद अलग-अलग कालखंडों में देखा जा सकता है। स्वतंत्रता से पूर्व महिलाएं कई तरह की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूढियों में जी रही थीं। इसके पीछे अशिक्षा, आर्थिक पराधीनता, संयुक्त परिवार प्रणाली, बहुपत्नी प्रथा और दहेज जैसी कुप्रथाएं जिम्मेदार रहीं। ब्रिटिश शासन के दौर में महिलाओं की स्थिति में मामूली बदलाव शुरू होने लगा था। उन्नीसवीं सदी में राजा राम मोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, ऐनी बेसेंट और महात्मा गांधी जैसे समाज सुधारकों ने महिलाओं को समाज की मुख्यधारा में लाने की पहल की और उनके उत्थान के लिए काम किए।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की स्थिति, विकास और उनके सशक्तिकरण का सवाल अत्यंत महत्वपूर्ण है। आजादी के साढ़े सात दशक बीत जाने के बाद जिस तरह हमारे देश में शिक्षा, स्वास्थ्य, औद्योगिकीकरण, रोजगार, नगरीकरण के क्षेत्र में वृद्धि होने के साथ ही समाज में सामाजिक-राजनीतिक चेतना विकसित हो रही है, उसके सापेक्ष महिलाओं की स्थिति उतनी संतोषप्रद नहीं दिखाई देती। हालांकि कुछ दशकों से हमारे देश में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति में सुधार आया है, लेकिन फिर भी साक्षरता का फीसद पुरुषों की तुलना में कम ही है। वर्ष 2001 की जनगणना के आधार पर देश की कुल साक्षरता दर 64.4 फीसद आंकी गई थी, इसमें पुरुषों की साक्षरता दर 75.85 फीसद और महिलाओं की साक्षरता दर 54.16 फीसद थी। इससे पूर्व 1991 में पुरुषों की साक्षरता दर 64.13 और महिलाओं की साक्षरता मात्र 39.29 फीसद ही थी। जबकि 2011 की जनगणना के अनुसार कुल साक्षरता दर 82.1 फीसद और महिलाओं की साक्षरता दर बढ़कर 65.5 फीसद हो गई है। इन आंकड़ों से साफ पता चला है कि पिछले दो दशकों में महिलाओं की शिक्षा में संतोषजनक सुधार आया है। हमारे देश में महिलाओं की साक्षरता नगरीय क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत कम है। शिक्षित नहीं होने के कारण ही महिलाएं पुरुषों पर आश्रित रहती हैं या अन्य निम्न स्तर और अथक परिश्रम करने वाले कामों को करने के लिए मजबूर होती हैं।

वसुधैव कुटुम्बकम की असली सूत्रधार

महिलाएं संवेदनशीलता से निर्णय लेने में ही नहीं, सामूहिक सोच से कार्य करने में भी पुरुषों से कहीं अधिक बेहतर हैं। उनकी प्रतिभा को यदि अवसर मिलते हैं तो वे अधिक तेजी से आगे बढ़ पूरे समाज के विकास का मार्ग प्रशस्त करती हैं। महात्मा गांधी ने इसीलिए कभी कहा था कि किसी परिवार में एक महिला यदि शिक्षित हो जाती है तो दो परिवार उससे लाभान्वित होते हैं। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ जैसे आंदोलनों की जरूरत क्यों पड़ी? इसलिए कि बेटियां पढ़ लेती हैं और समाज में उनका अस्तित्व बचा रहता है तो भारत फिर से महाशक्ति बनने की राहत पर चल सकता है। मैं यह मानता हूं कि यह महिला शक्ति ही है, जो केवल अपने लिए नहीं, पूरे विश्व के भले को दृष्टिगत रखते हुए कार्य करती है। वसुधैव कुटुम्बकम की धारणा की असली सूत्रधार महिला शक्ति ही रही है।

कलराज मिश्र, राज्यपाल–राजस्थान

विशाल जनसंख्या के सापेक्ष भारत में स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति अच्छी नहीं है। ग्रामीण, दुर्गम और पर्वतीय इलाकों में प्रसव की समुचित स्वास्थ्य सुविधा न मिलने से कई प्रसूता महिलाओं की मौत तक हो जाती है। इसके अलावा असमान लिंग अनुपात, महिला मृत्यु दर ज्यादा होना, कुपोषण और महिलाओं में बीमारियों की अधिकता जैसे कई सवाल महिलाओं के जीवन को प्रभावित करते हैं। हमारे देश में खेती, उद्योग, खनन और अन्य से जुड़े कार्यों में महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा बेहद कम पारिश्रमिक मिलता है। बडी विडंबना है कि महिलाएं जो अपने घर-परिवार में खेती-बाड़ी, पशुपालन और अन्य घरेलू कामों में दिन-रात लगी रहती हैं, उनके इस परिश्रम की कोई कीमत नहीं आंकी जाती और न ही उन्हें इस काम का यथेष्ठ श्रेय मिलता है।

महिला सशक्तिकरण में समाज की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। देश की समग्र प्रगति तब तक नहीं हो सकती, जब तक उस देश की राजनीति से लेकर शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में वहां की महिलाएं सशक्त बनकर न उभरी हों। तमाम प्रभावी नीतियों और योजनाओं के बावजूद हकीकत यह है कि महिलाएं व्यावहारिकता में अब भी तरह-तरह की सामाजिक और आर्थिक समस्याओं से जूझ रही हैं। निश्चित तौर पर यह मानना होगा कि जब तक परिवार और समाज सकारात्मक सोच के साथ आगे नहीं बढ़ेगा। तब तक महिलाओं के विकास और सशक्तिकरण की बातें करना महज एक कल्पना ही होगी।

समाज में प्रत्येक पुरुष और महिला को संविधान द्वारा सामाजिक तौर पर समस्त मूलभूत अधिकार दिए गए हैं, लेकिन फिर भी किसी न किसी रूप में सामाजिक रूढिवादी मान्यताओं और विषमताओं के कारण महिलाएं अपने अधिकारों से वंचित रह जाती हैं। अत: इस महत्वपूर्ण मुद्दे के समाधान की दिशा में हमारे देश में कई गैर सरकारी और स्वैच्छिक संस्थाएं, लिंग विभेद और महिलाओं से जुड़ी अन्य समस्याओं को दूर करने के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं से सहयोग लेकर अपने स्तर पर प्रयास कर रही हैं।

मीडिया और संचार माध्यमों की भी महिला विकास और सशक्तिकरण के संदर्भ में भी उतना ही कारगर माना जा सकता है। यद्यपि भारत का महिला और बाल विकास विभाग महिलाओं के विकास के लिए सतत प्रयत्नशील रहा है और अन्य सरकारी व गैर सरकारी संस्थाएं भी अपने स्तर पर कार्य कर रही हैं, लेकिन इधर कुछ वर्षों में देखने में आया है कि मीडिया और संचार माध्यम इस दिशा में सक्रिय हुए हैं और उनका सकारात्मक परिणाम सामने आने लगा है। दिल्ली के निर्भया कांड के बाद उसे राष्ट्रीय फलक पर प्रमुख मुद्दा बनाने में जो सराहनीय भूमिका मीडिया और अन्य संचार साधनों ने निभाई, वह निश्चित ही प्रशंसनीय रही। समाचार पत्रों और टीवी के माध्यम से प्रसारित खबरों और योजनाओं की जानकारी अथवा विज्ञापनों का भी व्यापक प्रभाव महिला वर्ग पर पड़ा है। महिला सशक्तिकरण और विकास, बालिका शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा और महिलाओं की स्वास्थ्य संबंधी योजनाओं और उनसे जुड़ी समस्याओं पर दूरदर्शन, आकाशवाणी सहित तमाम अन्य चैनल कार्यक्रम प्रसारित कर इस संदर्भ में अच्छा प्रयास कर रहे हैं।

यह बात भी ध्यान में रखनी होगी कि कुछ निजी चैनलों में प्रसारित होने वाले कतिपय धारावाहिक कार्यक्रमों में महिलाओं के चरित्र, व्यक्तित्व और पारिवारिक संबंधों को जिस काल्पनिक और विकृत रूपों में दिखाया जा रहा है, वह समाज को सकारात्मक सोच नहीं दे पा रहा है, यहीं बात विज्ञापनों के बारे में कही जा सकती है कि महिलाओं की सुंदरता और शरीर का उपयोग उपभोग की वस्तु के रूप में ही उपभोक्ताओं को आकर्षित करने में किया जाता है। विज्ञापन कंपनियों का उद्देश्य तो केवल वस्तुओं की बिक्री बढ़ाना होता है। इसलिए यहां सवाल यह उठता है कि क्या विज्ञापन कंपनियां अपनी तरफ से महिला सशक्तिकरण व विकास के लिए विज्ञापन नहीं बना सकती? सफल महिला उद्यमी के अनुभवों को साक्षात्कार, फीचर, आलेख व वृत्तचित्रों के जरिये समाज में जागृति लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया जा सकता है। इनके अलावा सिनेमा, नाटक, कठपुतली और नुक्कड़ नाटक जैसे दूसरे जनसंचार माध्यमों को भी महिला सशक्तिकरण व विकास का प्रबल आधार बनाया जा सकता है।

चिंता से भी पनपते हैं कई रोग

सुधांशु उनियाल

आजकल विश्व की संभवत: सबसे प्रमुख व्यक्तिगत समस्या है 'चिंता'। प्राय: सभी स्त्री-पुरुष भली-भांति जानते हैं कि चिंता करना हानिकारक हैं, लेकिन फिर भी वे चिंतित रहते हैं। यह देखा गया है कि पुरुषों की अपेक्षा महिलाएं अधिक चिंताग्रस्त रहती हैं। कभी गृहस्थी की चिंता तो कभी रोटी की चिंता, कभी इसकी चिंता, कभी उसकी, कभी गंभीर चिंता तो कभी सामान्य चिंता अर्थात चिंता उन्हें किसी न किसी रूप में घेरे ही रहती है। चिंता करना अत्यंत हानिकारक माना गया है। कहा भी गया है कि चिंता चिता समान। चिंता हमारी शक्तियों का ह्रास करती है, विचारों को भ्रांत बनाती है तथा स्वास्थ्य पर भी बुरा असर डालती है। जिस समय हम चिंता कर रहे होते हैं, उस समय हमारे सोचने-समझने की शक्ति क्षीण हो जाती है, क्योंकि चिंता एकाग्रता को खत्म करती है। जब हम चिंतित रहते हैं तो हमारे विचार सर्वत्र भटकते रहते हैं और हम निर्णय करने की शक्ति से हाथ धो बैठते हैं। अक्सर हमारी चिंता किसी न किसी प्रकार की मूर्खतापूर्ण कल्पनाओं से भरी होती है। हम अपना जीवन बहुत सी ऐसी बातों की चिंता में व्यतीत करते हैं जो वास्तव में कभी नहीं होती। यदि ध्यान से सोचें तो स्मरण हो जाएगा कि अपने जीवन की किसी महत्वपूर्ण घटना से पूर्व हमारा मन कई दिनों या कई महीनों तक बेचैन रहा था जैसे परीक्षा परिणाम से पूर्व, किसी पद ग्रहण करने से पहले या फिर कोई महत्वपूर्ण कार्य करने से पहले। उसम समय आपको यही आशंका घेरे रहती है कि कहीं आपका अनुमान गलत न हो जाए अथवा कहीं आप असफल न हो जाएं। उस समय उस आशंका, चिंता या भय के कारण आपका मन भारी-भारी रहता था।

आगे की सोचकर न हो परेशान

हम अपना जीवन बहुत सी ऐसी बातों की चिंता में व्यतीत करते हैं जो वास्तव में कभी नहीं होती। यदि ध्यान से सोचें तो आपको स्मरण हो जाएगा कि अपने जीवन की किसी महत्वपूर्ण घटना से पूर्व आपका मन कई दिनों या कई महीनों तक बेचैन था जैसे परीक्षा परिणाम से पूर्व, किसी पद ग्रहण करने से पहले या फिर कोई महत्वपूर्ण कार्य करने से पहले।

आप अपने को अस्वस्थ, अप्रकृत अनुभव करते थे, किंतु उस समय आपने इस सत्य पर विचार नहीं किया था कि वह आशंका का भूत आपके अपने ही मन की रचना थी। इस प्रकार अनेक महिलाएं अपने ही मन की पैदा की हुई चिंता से कष्ट पाती रहती हैं और अपना जीवन बर्बाद कर लेती हैं।

- यदि आप चिंता से दूर रहना चाहते है तो वर्तमान में रहिए।
- स्मरण करें कि आज वही कल है जिसकी आपने कल चिंता की थी।
- अनेक चिंताएं समय बीतने पर स्वत: ही हल हो जाया करती हैं।
- व्यस्त रहा कीजिए ताकि चिंता का अवसर रही न मिलें।
- अपनी भूलों का लेखा रखिए एवं अपनी आलोचना स्वयं कीजिए। इससे चिंता दूर करने में मदद होगी।
- चिंता से दूर भागकर उससे बचा नहीं जा सकता पर उसके प्रति अपने मानसिक रवैये को बदलने से उसे दूर किया जा सकता है।
- तथ्यों का आंकलन कीजिए। संसार में आधी चिंता तो इसलिए होती है कि लोग अपने निर्णय के आधार को जाने बिना ही निर्णय लेने का प्रयास करते हैं।
- अपने मस्तिष्क में शांति, साहस, स्वास्थ्य और आशा के विचार रखिए। हमारा जीवन हमेशा विचारों जैसा ही होता है।
- कल पर विचार अवश्य कीजिए, उस पर मनन कीजिए, योजनाएं बनाइये, तैयारी कीजिए किंतु उसके लिए चिंतित मत होइए।

CHANGI
PRISHA
ILLUMINATION
EXCLUSIVE ARCHITECTURAL RANGE
CRESCENT
Crompton
Fans
Jaquar
WATER
HEATERS
ABOUT PADAM LIGHTING
PADAM LIGHTING is committed to promoting efficient lighting that benefit human comfort & well being. Since 2012, we are authorized distributor for leading brands. We look forward to your continuous support and in turn giving you a remarkable experience in the world of "Lighting".
GM
SWITCH TO A BETTER WORLD
SWITCHES &
HOME AUTOMATION
GM MODULAR PVT. LTD.

प्रत्यूष

उत्तराखंडः मुख्यमंत्री के दावेदार, चार उम्मीदवार

पुष्करसिंह धामी, भाजपा

मदन कौशिक, भाजपा

हरीश रावत, कांग्रेस

प्रीतमसिंह, कांग्रेस

नंद किशोर

उत्तराखंड में विधानसभा की 70 सीटों के लिए 14 फरवरी को एक ही चरण में मतदान हो चुका है। चार विधानसभा सीटों के मतदाताओं ने राज्य के भावी मुख्यमंत्री का नाम मतपेटी में बंद कर दिया है। वाले दिन 10 मार्च को ही यह खुलासा होगा कि बहुमत फिर भाजपा के पक्ष में होगा अथवा कांग्रेस उससे सत्ता छीन लेगी। दोनों ही दलों से दो-दो उम्मीदवार मुख्यमंत्री पद के दावेदार हैं। देखना है लॉटरी किसके नाम खुलती है। उत्तराखंड की जनता इस बार विधानसभा चुनाव में 632 उम्मीदवारों में से चार उम्मीदवारों को मुख्यंमत्री के दावेदार के तौर पर चुनने जा रही है, जिनके भाग्य का फैसला 10 मार्च को मतगणना के बाद होगा। राज्य विधानसभा के चुनाव के लिए सबसे ज्यादा 157 उम्मीदवार देहरादून जिले की 10 विधानसभा सीटों पर थे। हरिद्वार की 11 विधानसभा सीटों पर 110 उम्मीदवार मैदान में थे। सबसे कम चंपावत और बागेश्वर जिले में 14-14 उम्मीदवार चुनाव मैदान में डटे थे। राज्य की 70 विधानसभा सीटों में से सबसे ज्यादा 19 उम्मीदवारों ने देहरादून की धर्मपुर विधानसभा सीट से चुनाव लड़ा। 19 विधानसभा सीटों पर भाजपा के तथा 12 विधानसभा सीटों पर कांग्रेस के बागी उम्मीदवार खड़े थे, जिन्होंने दोनों दलों के समीकरण गड़बड़ा दिए। भाजपा और कांग्रेस कुछ बागियों को तो मनाने में कामयाब रही, परंतु कुछ बागियों ने अपनी पार्टी के अधिकृत उम्मीदवारों के खिलाफ ताल ठोके रखने में कसर नहीं रखी। उत्तराखंड की चार विधानसभा सीटों के मतदाता उत्तराखंड के भावी मुख्यमंत्री का फैसला पेटी में बंद कर चुके हैं। जिनमें कुमाऊं मंडल की खटीमा विधानसभा सीट से राज्य के मौजूदा मुख्यमंत्री पुष्करसिंह धामी भी हैं। उनके विधानसभा क्षेत्र के मतदाताओं ने राज्य के भावी युवा मुख्यमंत्री के रूप में उन्हें वोट दिया, क्योंकि भाजपा ने नारा दिया था किया युवा ही उम्मीद है। धामी ने अपने सात महीने के मुख्यमंत्री के कार्यकाल में भाजपा को मजबूती प्रदान की है और उनसे पहले भाजपा की जो दुर्गति उत्तराखंड में हो रही थी, उससे पार्टी को उबार कर कांग्रेस को एक बड़ी चुनौती दी है।

पुष्करसिंह धामी कहते हैं कि जब उन्होंने मुख्यमंत्री का कार्यभार संभाला था तब विरोधी कहते थे कि भाजपा 25 सीट लेकर आएगी और बाद में कहने लगे कि भाजपा 35-36 सीटें लेकर आएगी, जबकि मतदान के बाद लोग कह रहे हैं कि भाजपा 45-50 सीटें लेकर आएगी। लेकिन हम 60 के पार सीट लेकर आएंगे। दूसरी ओर कांग्रेस के मुख्यमंत्री के चेहरे के रूप में हरीश रावत ने कुमाऊं मंडल की लालकुआं और विधानसभा में कांग्रेस के नेता प्रतिपक्ष प्रीतमसिंह ने गढ़वाल मंडल की चकराता विधानसभा सीट से चुनाव लड़ा हैं। उत्तराखंड राज्य बनने के बाद वे लगातार इस सीट से कांग्रेस के विधायक चुने जाते रहे हैं। उनके विधानसभा क्षेत्र की जनता उन्हें उत्तराखंड के भावी मुख्यमंत्री के रूप में चुन रही है। उनकी अपने विधानसभा क्षेत्र में जबरदस्त पकड़ है। वे पांचवी बार विधानसभा का चुनाव लड़ रहे हैं। कांग्रेस कार्यकर्ताओं का कहना है कि प्रीतमसिंह मृदुभाषी है और मिलनसार भी। उनको लेकर पार्टी में किसी तरह का कोई विवाद नहीं है। उनकी इस छवि के कारण पार्टी आलाकमान ने पहले उन्हें प्रदेश कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया और उसके बाद विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष की जिम्मेदारी दी। कांग्रेस के मुख्यमंत्री पद के सबसे प्रबल दावेदार हरीश रावत सबसे बड़ा चेहरा है। लाल कुआं विधानसभा क्षेत्र के कांग्रेस समर्थकों का कहना है कि कांग्रेस की सरकार उत्तराखंड में बनने पर हरीश रावत ही राज्य के अगले मुख्यमंत्री होंगे। उनकी पहचान राजय में उत्तराखंडीयत की रक्षा करने वाली है। हरीश रावत उत्तराखंड में तीन बार क्रमशः फरवरी 2014 से 27 मार्च 2016, 21 अप्रेल 2016 से 22 अप्रेल 2016 व 11 मई 2016 से 18 मार्च 2017 तक मुख्यमंत्री रहे। हरिद्वार नगर विधानसभा क्षेत्र की जनता भी उत्तराखंड के भावी मुख्यमंत्री के रूप में मदन कौशिक को देखती है। मदन कौशिक फिलहाल प्रदेश भाजपा का अध्यक्ष पद संभाल रहे हैं। वे 2002 से लेकर अब तक लगातार हरिद्वार नगर विधानसभा क्षेत्र से भाजपा के टिकट पर चुनाव जीत रहे हैं।

षष्ठम पुण्यतिथि

जन्म
2 फरवरी, 1931

देवलोक
30 जनवरी, 2016

युग पुरुष एवं जन-जन के प्रेरणा स्त्रोत

पं. जीवतराम शर्मा (बाबूजी)

संस्थापक - राजस्थान बाल कल्याण समिति
की षष्ठम पुण्यतिथि पर हम श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

श्रद्धानवत
गिरजा शंकर शर्मा, प्रबन्ध निदेशक
राजस्थान बाल कल्याण समिति परिवार

E-mail : jhadolrbks1@rediffmail.com | website : www.rbks.org

राजस्थान बाल कल्याण झाड़ोल द्वारा संचालित प्रकल्प

क्रम	विद्यालय प्रकल्प	क्रम	महाविद्यालय/उच्च शिक्षा प्रकल्प
1	रा.बा.वि.म. सीनियर सैकण्डरी विद्यालय, झाड़ोल	1	जे.आर. शर्मा पी.जी. महाविद्यालय, झाड़ोल
2	रा.बा.वि.म. उच्च प्राथमिक विद्यालय, झाड़ोल	2	गुरु पुष्कर जैन महाविद्यालय, झाड़ोल
3	रा.बा.वि.म. उच्च प्राथमिक विद्यालय, गोराणा	3	जे.आर. महाविद्यालय, रेलमगरा, राजसमन्द
4	राजस्थान पब्लिक मा.वि., झाड़ोल	4	जे.आर. महाविद्यालय, पिण्डवाड़ा, सिरोही
5	शैक्षणिक परिसर सीनियर सैकण्डरी विद्यालय, बीड़ा	5	जे.आर. बी.एड महाविद्यालय, झाड़ोल
6	हुनर घर उच्च प्राथमिक वि. बाखेल, कोटड़ा	6	जे.आर. शर्मा महाविद्यालय, ऋषभदेव, उदयपुर
7	ग्रामीण शिक्षा कार्यक्रम संस्था कार्यक्षेत्र	7	जे.आर. महाविद्यालय, माउण्ट आबू, सिरोही
8	शिशु पालना गृह एवं बालवाड़ी कार्यक्षेत्र	8	जे.आर. नर्सिंग संस्थान, सागवाड़ा, डूंगरपुर
9	हिंदुजा फाउंडेशन स्कूल शिक्षा कार्यक्रम	9	जे.आर. शर्मा पी जी महाविद्यालय, फलासिया
10	जे.आर.शर्मा कौशल विकास कार्यक्रम	10	जे. आर. औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, झाड़ोल
11	जे.आ. शर्मा छात्रवृत्ति कार्यक्रम	11	जे. आर. पी जी महाविद्यालय, प्रतापगढ़
12	विद्यालय विकास कार्यक्रम	12	जे. आर. कॉलेज, उदयपुर
13	बाल कल्याण शिक्षा कार्यक्रम	13	जे.आर. शर्मा पत्राचार एवं स्वयंपाठी शिक्षण कार्यक्रम
14	विद्यालय कम्प्यूटर शिक्षा कार्यक्रम	14	हिंदुजा फाउंडेशन उच्च शिक्षा कार्यक्रम

आवासीय शिक्षा प्रकल्प

1	अनु.जनजाति कन्या छात्रावास-प्रथम इकाई झाड़ोल, उदयपुर	10	जे.आर. शर्मा बी.एड महिला छात्रावास झाड़ोल, उदयपुर
2	अनु. जनजाति कन्या छात्रावास -द्वितीय इकाई, झाड़ोल, उदयपुर	11	निराश्रित बालगृह झाड़ोल, उदयपुर
3	अनु. जनजाति कन्या स्नातकोत्तर छात्रावास, झाड़ोल, उदयपुर	12	निराश्रित बालिकागृह झाड़ोल, उदयपुर
4	अनुदानित कन्या छात्रावास रेलमगरा, राजसमन्द	13	गुरुकुल बोर्डिंग हॉस्टल-बालक, झाड़ोल, उदयपुर
5	अनु. जनजाति कन्या छात्रावास-सागवाड़ा, डूंगरपुर	14	हंसराज बालिका गृह, देबारी, उदयपुर
6	अनु. जनजाति कन्या छात्रावास डूंगरपुर	15	जे. आर. शर्मा नर्सिंग हॉस्टल, सागवाड़ा, डूंगरपुर
7	शैक्षणिक परिसर आवासीय कन्या छात्रावास बीड़ा, झाड़ोल, उदयपुर	16	जे. आर. शर्मा हॉस्टल, प्रतापगढ़
8	निराश्रित बालिका गृह, सागवाड़ा, डूंगरपुर	17	कौशल विकास छात्रावास, सागवाड़ा
9	अनु. जनजाति कन्या छात्रावास, सिजवाड़	18	अनु. जनजाति कन्या छात्रावास, सागवाड़ा

समस्त ग्रामीण सामुदायिक विकास इकाईयां (लाभान्वित गॉव 875)

राजस्थान, मध्यप्रदेश एवं गुजरात के जनजाति बाहुल्य 22 जिलों में जलग्रहण, वाड़ी परियोजना, आजीविका विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, जागरूकता कार्यक्रम, कौशल विकास, आय संवर्धन एवं अन्य सामाजिक उत्थान कार्यक्रम, इन्दिरा रसोई, शेलटर होम आदि

क्रम	संस्था द्वारा स्थापित गौशालायें एवं फाउण्डेशन	क्रम	संस्था द्वारा स्थापित कम्पनीयां
1	सुरभि गौशाला धाम, बरड़ा, उदयपुर	1	वागड़ प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड, डूंगरपुर
2	ब्रह्मानंद कपिल गौशाला, हंडिया, मध्यप्रदेश	2	झाड़ोल प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड, उदयपुर
3	जे.आर. शर्मा फाउण्डेशन, उदयपुर	3	मोरवल प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड, उदयपुर
4	गोगुन्दा पॉटरी फाउण्डेशन	4	मेवाड़ पॉटरी प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड
5	6 इन्दिरा रसोई उदयपुर एवं डूंगरपुर	5	2 आश्रय स्थल डूंगरपुर
6	2 शहरी आजीविका केन्द्र उदयपुर एवं जोधपुर	6	31 कृषि एवं गैर कृषि उत्पादन प्रा.लि. कम्पनीज

प्रतिष्ठान

ऋषिराज एण्ड ब्रदर्स, मगवास	कमलेश्वर फर्नीचर एण्ड वेल्डिंग वर्क्स, मगवास	जे.आर. शर्मा बिल्डर्स मगवास

प्रत्यूष

निजी क्षेत्र में शोध को बढ़ावा दूरगामी कदम

रक्षा के क्षेत्र में आत्म निर्भरता पर बल

संसद द्वारा पारित वर्ष 2022-23 के आम बजट में रक्षा पर 5.25 लाख करोड़ का प्रावधान किया गया है जो पिछले वर्ष से 47 हजार करोड़ ज्यादा है। रक्षा अनुसंधान के मद में खर्च की जाने वाली 25 फीसदी राशि निजी उद्योगों, स्टार्टअप तथा अकादमियों को भी प्रदान की जाएगी। जिसका मकसद देश के लिए जरूरी मिलिट्री प्लेटफार्म और उपकरणों का विकास और निर्माण देश में ही करना है।

सतन जोशी

अगले साल के रक्षा बजट में भले ही ज्यादा बढ़ोतरी नहीं हुई हो, लेकिन इसमें रक्षा निर्माण क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की दिशा में उपाय जरूर किए गए हैं। रक्षा क्षेत्र में कुल आवंटन को 4.78 लाख करोड़ से बढ़ाकर 5.25 लाख करोड़ किया गया है। लेकिन बड़ी घोषणा यह है कि रक्षा अनुसंधान के मद में खर्च की जाने वाली 25 फीसदी राशि निजी उद्योगों, स्टार्टअप तथा अकादमियों को भी प्रदान की जाएगी। मकसद यह है कि देश के जरूरी मिलिट्री प्लेटफार्म और उपकरणों का विकास और निर्माण देश में ही हो।

रक्षा बजट की कुल राशि 5,25,166 करोड़

चालू वर्ष का कुल रक्षा बजट 4,78,196 करोड़ है, जिसमें करीब 1.16 लाख करोड़ पेंशन के लिए निर्धारित हैं। जबकि रक्षा आधुनिकीकरण की राशि 1.36 करोड़ है। रक्षा बजट की कुल राशि 5,25,16 करोड़ है, जिसमें 1.19 करोड़ पेंशन और 1.52 करोड़ की राशि रक्षा सेवाओं के आधुनिकीकरण के लिए रखी गई है।

आधुनिकीकरण के बजट में 12 फीसदी की बढ़ोतरी

पेंशन की राशि में साल-दर-साल बढ़ोतरी स्वाभाविक है,लेकिन आधुनिकीकरण के बजट में 16,309 करोड़ की बढ़ोतरी हुई है। बढ़ोतरी 12 फीसदी की है। हालांकि पिछले साल यह बढ़ोतरी 19 फसदी की हुई थी। इसी प्रकार यदि कुल रक्षा बजट की बात करें तो पिछले साल उसमें 7.5 फीसदी की बढ़ोतरी हुई थी, जो इस बार 9.8 फीसदी के करीब है। यदि राशि में देखें तो कुल 46,970 करोड़ रुपए इस बार अधिक मिले हैं।

किसे कितना बजट मिला

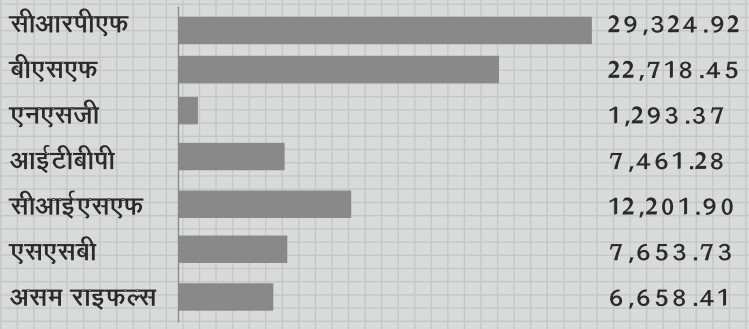

68 फीसदी रक्षा उपकरण देश में खरीदे जाएंगे

सरकार पिछले कुछ समय से रक्षा खरीद के मामले में देश को आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश कर रही है। इस दिशा में कुछ सफलता भी मिली है। इस रफ्तार को आगे बढ़ाने के लिए सरकार ने कुल रक्षा खरीद की 68 फीसदी खरीद देश में ही निर्मित सामग्री की करने की घोषणा की है। पिछले बजट में यह सीमा 58 फीसदी की थी। इससे ज्यादा से ज्यादा खरीद देश में बने रक्षा सामानों की हो सकेगी।

25 फीसदी शोध राशि निजी उद्योगों-स्टार्टअप को मिलेगी

रक्षा शोध पर देश में जो धनराशि खर्च होती थी, ज्यादातर वह रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) को ही दी जाती थी। लेकिन बजट में घोषणा की गई है कि 25 फीसदी शोध राशि निजी उद्योगों, स्टार्टअप और अकादमियों को प्रदान की जाएगी ताकि वे भी रक्षा तकनीकों का विकास कर सकें और बाद में उनका निर्माण भी करें। वे डीआरडीओ के साथ मिलकर भी शोध कर सकेंगी। दरअसल, सरकार ने पिछले एक साल के दौरान करीब 200 से अधिक रक्षा तकनीकों को देश में ही निर्मित करने का निर्णय लिया है। यह निजी क्षेत्र के सहयोग से

बदलती भौगोलिक-राजनीतिक स्थिति और सुरक्षा परिदृश्य के कारण भारत में सैन्य आधुनिकीकरण तेज किया जा रहा है। बीते एक साल में आधुनिकीकरण की कवायद तेज हुई है, जिसकी बड़ी वजह चीन के साथ तनाव और लद्दाख गतिरोध को बताया जा रहा है। साथ ही, पाकिस्तान के साथ लगातार तनाव भी एक वजह है।

आधुनिककरण की कवायद सुनियोजित नहीं थी। राष्ट्रीय सुरक्षा विशेषज्ञ भरत कर्नाड के मुताबिक भारत में सैन्य आधुनिकीकरण हमेशा एक सहायक प्रक्रिया रही है, जो केवल संबंधित सेवाओं के निदेशालयों द्वारा तैयार की गई संभावित योजनाओं के अनुरूप है।

विशेषज्ञों का कहना है कि भारत के सैन्य आधुनिकीकरण के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक रक्षा बजट है। साल 2020 में भारत का रक्षा बजट करीब 72.9 बिलियन डालर था, जबकि चीन का रक्षा बजट इसी दौरान करीब 178 बिलियन डालर था। भरत कर्नाड कहते हैं, आधुनिकीकरण सेना को उपलब्ध कराए गए वित्तीय संसाधनों का एक कार्य है। भारत के मामले में एक मात्र समस्या यह है कि यहां बजट का एक बड़ा हिस्सा जनशक्ति पर खर्च हो रहा है।

सेना ने 2020-2021 के बजट का 56 फीसदी या 38 बिलियन डालर का पूरा हिस्सा लिया और इसमें से केवल 18 फीसदी यानी करीब सात बिलियन डालर, पूंजीगत व्यय के लिए आवंटित किया गया था, जो कि आधुनिक हथियारों और पुर्जों की खरीद के लिए है। आज के जमाने में सात बिलियन डालर से सैन्य आधुनिकीकरण नहीं किया जा सकता।

आधुनिकीकरण की दिशा में महत्वाकांक्षी योजना एकीकृत कमान की है। सरकार सेना, नौसेना और वायुसेना की क्षमताओं को एकीकृत करना चाहती है। वर्तमान 18 एकल सेवा इकाइयों को पांच थिएटर कमांड के तहत लाया जाना है ताकि भविष्य के संघर्षों से निपटने में एकीकृत दृष्टिकोण स्थापित हो सके।

जानकारों के मुताबिक सुधार आधुनिकीकरण प्रक्रिया के लिए महत्वपूर्ण हैं। आधुनिकीकरण केवल हथियारों, प्लेटफार्म और उपकरणों के बारे में नहीं है। साल 2020 में सियाचिन पर भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (सीएजी) की एक रिपोर्ट- 'हिमालय में दुनिया का सबसे ऊंचा युद्धक्षेत्र' ने बहुत ही जरूरी सैन्य तैयारियों में कमी को उजागर किया था। पिछले दशक में सैन्य संसाधनों की कमी और उपकरणों के चलन से बाहर होने की ऐसी कई रिपोर्ट आई हैं। पुराने हथियार प्लेटफार्मों में जो अभी भी सेवा में हैं, उनमें सबसे विशिष्ट भारतीय वायु सेना बेड़े में मिग-21 बाइसन है, जिसे चरणबद्ध तरीके से हटाया जा रहा है।

विमान अभी भी उपयोग में क्यों हैं, इसके कारणों के बारे में विश्लेषकों का कहना है कि नए जेट प्राप्त करने के लिए पैसे की कमी है और इसी वजह से सेना और नौसेना की विमानन इकाइयों का एक बार में आधुनिकीकरण नहीं किया जा सकता है। कुछ जानकारों का कहना है कि भारत को किस तरह के जेट विमानों की जरूरत है, इस पर अधिकारियों को स्पष्टता की जरूरत है। विशेषज्ञों का जोर देकर कहना है कि इन सबके अलावा, साइबर और नेटवर्क केन्द्रित युद्ध पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है।

भारत अभी दुनिया के शीर्ष पांच हथियार आयातकों में से एक है। हालांकि केन्द्र सरकार हथियारों और सैन्य उपकरणों के स्थानीय स्तर पर उत्पादन और खरीद पर अधिक जोर दे रही है।

आंतरिक सुरक्षा

आम बजट में आंतरिक सुरक्षा के लिए जिम्मेदार गृह मंत्रालय के बजट में करीब 11 फीसदी की बढ़ोतरी की गई है। वर्ष 2022-23 में 185776.55 करोड़ आवंटित किए गए है। पिछले वर्ष यह आवंटन 166546.55 करोड़ रुपए थे। इसी तरह महिला सुरक्षा पर फोकस करते हुए निर्भया फंड में करीब दोगुनी राशि आवंटित की गई है। पिछले बार 100 करोड़ रुपए की तुलना में इस बजट में 200 करोड़ का आवंटन किया गया है। महिलाओं और बच्चों के प्रति साइबर अपराध के रोकथाम के लिए भी 176 करोड़ से ज्यादा आवंटित किए गए हैं। आंतरिक सुरक्षा के लिहाज से बढ़ी चुनौतियों के मद्देनजर अर्धसैन्य बलों के बजट को बढ़ाया गया है। साथ ही पुलिस आधुनिकीकरण और खुफिया तंत्र के लिए भी आवंटन बढ़ा है।

कैसा लगा यह अंक

प्रत्यूष

इस अंक में कौन सा आलेख आपको ज्यादा पसंद आया। आप किन विषयों पर आलेख पढ़ना ज्यादा पसंद करेंगे? किस विषय पर आप हमें अपना मौलिक आलेख, शोध, कविता, कहानी भेजना चाहेंगे। कृपया हमें लिखें। आपके रचनात्मक सुझावों का सदैव स्वागत होगा।

परीक्षाः डरें नहीं- तैयारी करें

डॉ. रजनी नागदा

इस माह से कई राज्यों में सीनियर सैकण्डरी व महाविद्यालयी स्तरीय परीक्षाएं आयोजित हो रही हैं। परीक्षा का नाम सुनते ही बच्चों में डर, तनाव, घबराहट, चिड़चिड़ापन जैसी समस्याएं उभर आती हैं। जब भी पढ़ने बैठते हैं, नींद के झोंके आने लगते हैं। जो भी पढ़ रहे हैं, याद नहीं हो पा रहा। कई बार ऐसा भी होता कि दूसरी किताबें पढ़ते वक्त उन्हें इन हालातों से रूबरू नहीं होना पड़ता, लेकिन पाठ्यक्रम से जुड़ी किताब पढ़ने में अरूचि होती है। परीक्षा विद्यार्थियों को भारी बोझ सी लगती है। उन्हें परीक्षा का डर कई बार बीमार बना देता है। इस एग्जाम फीवर से बच्चों को बचना और बचाना चाहिए। हम चाहे कोई भी काम करें, उसमें यदि टेंशन महसूस करते हैं तो इसका मतलब हम अटेंशन नहीं हैं। यही टेंशन परीक्षा के समय विद्यार्थी झेलते हैं। साल भर वे परीक्षा की पढ़ाई नहीं करते और जब परीक्षा के कुछ दिन बच जाते हैं तो घबराने लगते हैं। तनाव बढ़ने लगता है। इन परेशानियों से बचने का एक ही उपाय हैं कि परीक्षा आने के एक महीने पहले से ही तैयारी शुरू कर दीं।

टाइम टेबल बनाएं

परीक्षा से पहले की तैयारी में एक टाइम टेबल बनाएं, जिसके तहत आप रोजाना खुद से पढ़ाई करें। ताकि परीक्षा के समय आपके पास पर्याप्त समय हो रिवीजन करने का।

पढ़े हुए को दोबारा पढ़ें

परीक्षा से संबंधित जिस विषय को आपने एक दिन में पढ़ा है, उसे परीक्षा से पहले एक बार और पढ़ लें। मतलब अगर आपने किसी विषय का कोई एक अध्याय खत्म किया है, तो अध्याय समाप्त होने के बाद थोड़े समय के बाद दोबारा उसे पढ़ें। ताकि जो भी पढ़ा हुआ है उसे आप भूलें नहीं।

सावधानी

काक चेष्टा, बको ध्यानं, श्वान निंद्रा तथैव च अल्पाहारी, सदाचारी, विद्यार्थीन लक्षणं। संस्कृत का यह श्लोक विद्यार्थी जीवन का मूलमंत्र है। अगर छात्र इस श्लोक को अपने जीवन में उतार लें तो विफलता पास भी नहीं आएगी। अगर आपको परीक्षा का बुखार चढ़ गया है, तो उसे उतारने के निम्न तरीके हो सकते हैं।

उद्देश्य

अगर आपके सामने आपका उद्देश्य स्पष्ट है तो आप परीक्षा के बुखार से कभी ग्रसित नहीं होंगे। क्योंकि हर विद्यार्थी की क्षमता अलग होती है और सभी के उद्देश्य भिन्न। इसलिए यह जरूरी नहीं कि हर विद्यार्थी चाहे कि वह प्रथम स्थान प्राप्त करें। किसी को सामान्य श्रेणी में रहना है तो किसी को प्रथम। इसलिए आप उद्देश्य को स्पष्ट रखें, ताकि आपको यह बुखार झेलना न पड़े।

योजना बनाएं

विद्यार्थी के लिए एक-एक मिनट अमूल्य होता है। इसलिए उसे अपने समय को बर्बाद नहीं करना चाहिए। हमें किस समय पढ़ना है, क्या पढ़ना है, खाने-पीने, खेलने और व्यायाम का क्या समय होगा। यह भी सब सुनिश्चित कर लें। इस सब दैनिक कार्यों की अगर आप योजना बना लेते हैं तो आपको पढ़ाई बोझ नहीं लगेगी।

सकारात्मक सोचें

कहते हैं कि अगर आप खुद को लेकर अधिक नकारात्मक सोचते हैं तो आप में नकारात्मकता अधिक बढ़ती चली जाती है। इसलिए परीक्षा के समय पर जितना हो सके उतना सकारात्मक सोचें। खुद को हतोत्साहित न करें। अगर आपने एक दिन में दो अध्याय भी खत्म किए हैं तो उस पर खुद को शबाशी दें। इस तरह आप परीक्षा के बुखार से दूर रह पाएंगे।

अभ्यास

अभ्यास करने से ही सफलता मिलती है। इसलिए निरंतर अभ्यास करते रहें। अभ्यास हमेशा करना चाहिए। बेशक आपको एक बार में पूरी सफलता न मिलें। पर थोड़ी तो मिलेगी। अगली बार उससे अधिक मिलेगी। अभ्यास से ही विद्यार्थी सफल हो सकते हैं।

खानपान

परीक्षा के समय छात्रों को अधिक मेहनत करनी पड़ती है। इसलिए अभिभावकों को बच्चे के खानपान पर विशेष ध्यान देना चाहिए। उन्हें हल्का खाना समय-समय पर देते रहें।

पंजीयन संख्या 617 वाई | जय सहकार | स्थापना: 18-02-1959

KVSS UDAIPUR

उदयपुर क्रय-विक्रय सहकारी समिति लि.

प्रतापनगर, उदयपुर (राज.)

संस्था के कार्य एक नज़र में...

- रसायनिक खाद, उन्नत बीज, कीटनाशक औषधियों का विपणन एवं वितरण कृषि उपज मण्डी दुकान नं. 36 से।
- आढ़त पर कृषि उपज का क्रय-विक्रय कर उत्पादकों को उचित मूल्य दिलाना, नकद भुगतान की सुविधा देना एवं कृषि उपज की रहन पर ऋण ब्याज उपलब्ध कराना जिसमें सदस्यों को कृषि उपज का उचित मूल्य मिल सके।
- राज्य सरकार की नीति के अनुसार लक्षित वितरण प्रणाली के अंतर्गत वस्तुएं वितरण करना।
- समर्थन मूल्य पर खाद्यान्नों की खरीद करना।
- दैनिक उपयोग की वस्तुओं का उचित मूल्य पर वितरण करना
- पशुपालकों के लिए सस्ती दर पर राजफेड का पशु आहार वितरण।
- मिड-डे मिल (पोषाहार) परिवहन।
- वाटर प्लांट (मेवाड़ जल धारा) के नाम से समृद्ध जल 20 लीटर जार में उपलब्ध कराना।
- उदयपुर डिवीजन की सहकारी संस्थाओं के माध्यम से बिनानी सीमेन्ट की बिक्री।

आशुतोष भट्ट
प्रशासक

हीरालाल मीणा
मुख्य प्रबंधक

प्रत्यूष

कैसा होगा डिजिटल रुपया

भगवान प्रसाद गौड़

अप्रेल 2022 से शुरू होने जा रहे नए वित्तीय वर्ष में भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) डिजिटल अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने और प्रभावी नकदी प्रबंधन के लिए डिजिटल मुद्रा पेश करेगा। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 1 फरवरी को ससंद में पेश आम बजट में इसकी घोषणा की थी। हालांकि भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिकांत दास ने कहा कि केन्द्रीय बैंक इस दिशा में जल्दबाजी नहीं करना चाहता है और वह इसके सभी पहलुओं पर गौर कर रहा है। डिजिटल करेंसी लाने की कोई समय सीमा निर्धारित नहीं की गई है। इसमें जो भी जोखिम हैं, उन पर हम पूरी तरह से गौर कर आश्वस्त हो जाना चाहते हैं। दास के अनुसार इसमें सबसे बड़ा जोखिम साइबर सुरक्षा और जालसाजी का है। यह डिजिटल करेंसी भी दुनियाभर में चल रही बिटकॉइन और अन्य तरह की क्रिप्टोकरेंसी की तरह ही ब्लॉकचेन और अन्य दूसरी क्रिप्टो तकनीकों पर आधारित होगी।

इकोनॉमी को बड़ा बूस्ट

डिजिटल करेंसी आने के बाद देश की इकॉनोमी को बड़ा बूस्ट मिलने की संभावना है। यह कैश का इलेक्ट्रोनिक रूप है। जैसे आप कैश का लेन-देन करते हैं। वैसे ही डिजिटल करेंसी का लेन-देन भी किया जा सकेगा। यह कुछ हद तक क्रिप्टोकरेंसी (बिटकॉइन या ईथर जैसी) जैसे ही काम करती है। इससे ट्रांजैक्शन बिना किसी मध्यस्थ या बैंक के हो जाता है। रिजर्व बैंक से डिजिटल करेंसी आपको मिलेगी और आप जिसे पेमेंट या ट्रांसफर करेंगे, उसके पास पहुंच जाएगी। न तो किसी वॉलेट में जाएगी और न ही बैंक अकाउंट में। बिल्कुल कैश की तरह काम करेगी, पर होगी डिजिटल।

कैसे है ये अलग?

यह बहुत अलग है। आपको लग रहा होगा कि डिजिटल ट्रांजैक्शन तो बैंक ट्रांसफर, डिजिटल वॉलेट्स या कार्ड पेमेंट्स से हो ही रहे हैं, तब डिजिटल करेंसी अलग कैसे हो गई। यह समझना बेहद जरूरी है कि ज्यादातर डिजिटल पेमेंट्स चेक की तरह काम करते हैं। आप बैंक को निर्देश देते हैं। वह आपके अकाउंट में जमा राशि से वास्तविक रुपए का पेमेंट या ट्रांजैक्शन करता है। हर डिजिटल ट्रांजैक्शन में कई संस्थाएं, लोग शामिल होते हैं, जो इस प्रोसेस को पूरा करते हैं। उदाहरण के लिए अगर आपने क्रेडिट कार्ड से कोई पेमेंट किया तो क्या तत्काल सामने वाले को मिल गया? नहीं। डिजिटल पेमेंट सामने वाले के अकाउंट में पहुचने के लिए एक मिनट से 48 घंटे तक ले लेता है। यानि पेमेंट तत्काल नहीं होता, उसकी एक प्रक्रिया है। जब आप डिजिटल करेंसी या डिजिटल रुपया की बात करते हैं तो आपने किया और सामने वाले को मिल गया। यही इसकी खूबी है। अभी हो रहे डिजिटल ट्रांजैक्शन किसी बैंक के खाते में जमा रुपए का ट्रांसफर है। पर सीबीडीसी तो करेंसी नोट्स की जगह लेने वाले हैं।

डिजिटल करेंसी के चार बड़े फायदे

1

एफिशियंसी: यह कम खर्चीली है। ट्रांजैक्शन भी तेजी से हो सकते हैं। इसके मुकाबले करेंसी नोट्स का प्रिंटिंग खर्च, लेन-देन की लागत भी अधिक है।

2

फइनेंशियल इनक्लूजन: डिजिटल करेंसी के लिए किसी व्यक्ति को बैंक खाते की जरूरत नहीं है। यह ऑफलाइन भी हो सकता है।

3

भ्रष्टाचार पर रोक: डिजिटल करेंसी पर सरकार की नजर रहेगी। डिजिटल रुपए की ट्रेकिंग हो सकेगी, जो कैश के साथ संभव नहीं है।

4

मॉनेटरी पॉलिसी: रिवर्ज बैंक के हाथ में होगा कि डिजिटल रुपया कितना और कब जारी करना है। मार्केट में रुपए की अधिकता या कमी को मैनेज किया जा सकेगा।

बिटकॉइन से अलग कैसे?

डिजिटल करेंसी का कंसेप्ट नया नहीं है। यह बिटकॉइन जैसी क्रिप्टोकरेंसी से आया है, जो 2009 में लांच हुई। इसके बाद ईथर, डॉगेकॉइन से लेकर पचासों क्रिप्टोकरेंसी लांच हो चुकी हैं। पिछले कुछ वर्षों में यह एक नए असेट क्लास के रूप में विकसित हुई है, जिसमें लोग इन्वेस्टमेंट कर रहे हैं। प्राइवेट क्रिप्टोकरेंसी प्राइवेट लोग या कंपनियां जारी करती है। इससे इसकी मॉनिटरिंग नहीं होती। गुमनाम रहकर भी लोग ट्रांजैक्शन कर रहे है, जिससे आतंकी घटनाओं व गैर कानूनी गतिविधियों में क्रिप्टोकरेंसी का इस्तेमाल हो रहा है। इन्हें किसी भी केन्द्रीय बैंक का सपोर्ट नहीं है। यह करेंसी लिमिटेड है, इस वजह से सप्लाई और डिमांड के अनुसार इसकी कीमत घटती-बढ़ती है। एक बिटकॉइन की वैल्यू में ही 50 प्रतिशत तक की गिरावट दर्ज हुई हैं। पर जब आप प्रस्तावित डिजिटल रुपया की बात करते हैं तो इसे दुनियाभर में केन्द्रीय बैंक यानी हमारे यहां रिजर्व बैंक लांच कर रहा है। न तो क्वांटिटी की सीमा है और न ही फाइनेंशियल और मौद्रिक स्थिरता का मुद्दा। एक रुपए का सिक्का और डिजिटल रुपए की मॉनिटरिंग हो सकेगी और किसके पास कितने पैसे हैं, यह रिजर्व बैंक को पता होगा।

RAMADA®
UDAIPUR RESORT & SPA

Rampura Circle, Kodiyat Road, Udaipur - 313 001
Tel. : 0294 3053800,9001298880 | Fax : 0294 3053900
reservations@ramadaudaipur.com | www.ramadaudaipur.com

बहु प्रतिक्षित राजनैतिक नियुक्तियां

अब भी आस में है, कार्यकर्ताओं की एक लम्बी कतार

प्रत्यूष ब्यूरो/जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने लम्बे समय बाद ही सही अन्ततोगत्वा राजनैतिक नियुक्तियों के माध्यम से उन विधायकों, नेताओं व कार्यकर्ताओं का पुनर्वास कर ही दिया, जिन्होंने समय-समय पर सत्ता और संगठन को बचाने और मजबूत करने में अपना अहम योगदान किया। हालांकि अब भी रूतबा पाने की आस में कार्यकर्ताओं की एक लम्बी कतार शेष है। जिसे जल्दी ही सत्ता और संगठन में स्थापित करना है।

महादेवसिंह खण्डेला
अध्यक्ष,
किसान आयोग

दीपचंद खेरिया
उपाध्यक्ष,
किसान आयोग

रामेश्वर डूडी
अध्यक्ष, राजस्थान एग्रो इंडस्ट्रीज डवलपमेंट बोर्ड

बृजकिशोर शर्मा
अध्यक्ष, राजस्थान खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड

जुबेर खान
अध्यक्ष, मेवात विकास बोर्ड

धीरज गुर्जर
अध्यक्ष, राजस्थान सीड्स कार्पोरेशन लिमिटेड

धर्मेन्द्र राठौड़
अध्यक्ष, राजस्थान पर्यटन विकास निगम

पुखराज पाराशर अध्यक्ष,
जन अभाव अभियोग
निराकरण समिति

रेहाना रियाज चिश्ती
अध्यक्ष, राज्य महिला
आयोग

लक्ष्मणसिंह रावत
अध्यक्ष, मगरा क्षेत्रीय
विकास मंडल

सुरेन्द्रसिंह जाड़ावत
अध्यक्ष, राजस्थान
धरोहर संरक्षण एवं
प्रोन्नति प्राधिकरण

राजीव अरोड़ा
अध्यक्ष, राजस्थान लघु
उद्योग विकास निगम

शंकर यादव
अध्यक्ष, अनुसूचित
जाति वित्त एवं
विकास कार्पोरेशन

डॉ. चन्द्रभान
उपाध्यक्ष, बीस
सूत्री कार्यक्रम

पंकज मेहता
उपाध्यक्ष, राजस्थान
खादी एवं ग्रामोद्योग
बोर्ड

जगदीश श्रीमाली
उपाध्यक्ष, श्रम
सलाहकार समिति

रमेश बोराणा
उपाध्यक्ष, राजस्थान
राज्य मेला प्राधिकरण

मंजू शर्मा
उपाध्यक्ष, विप्र
कल्याण बोर्ड

आईपीएस संजय
श्रोत्रिय, अध्यक्ष, राजस्थान
लोकसेवा आयोग

विधायकों को कैबिनेट या राज्यमंत्री का दर्जा नहीं

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि अधिकारियों के गलत फीडबैक के कारण साल 2013 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की हार हुई थी। अधिकारी फीडबैक देते रहे कि कांग्रेस फिर से सत्ता में आएगी, लेकिन पार्टी की हार हुई और 200 में से 21 विधानसभा सीटें ही मिली। सीएम ने कहा कि बोर्ड व निगमों में नियुक्ति पाने वाले विधायकों को केबिनेट या राज्य मंत्री का दर्जा नहीं दिया जाएगा। उन्हें किसी तरह की सरकारी सुविधा नहीं मिलेगी। राजनैतिक नियुक्ति पाने वाले नेताओं के साथ बैठक में उन्होंने कहा कि नियुक्ति पाने वाले नेता जनता से फीडबैक लेकर उच्च स्तर पर बताएं। जनता क्या चाहती है। जिससे 2023 में होने वाले विधानसभा चुनाव में फिर से कांग्रेस की सरकार बन सके।

नियुक्तियों में ये भी शामिल

- रफीक खान, अध्यक्ष राजस्थान राज्य अल्पसंख्यक आयोग
- खिलाड़ी लाल बैरवा, अध्यक्ष राजस्थान अनुसूचित जाति आयोग
- मेवाराम जैन, अध्यक्ष राजस्थान गौ सेवा आयोग
- हाकम अली, अध्यक्ष राजस्थान वक्फ विकास परिषद
- लाखन मीणा, अध्यक्ष डांग क्षेत्रीय विकास मंडल
- जोगेन्द्र अवाना, अध्यक्ष देवरानारायण बोर्ड
- कृष्णा पूनिया, अध्यक्ष राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद
- लक्ष्मण मीणा, अध्यक्ष राजस्थान अनुसूचित जनजाति आयोग
- रमीला खड़िया, उपाध्यक्ष राजस्थान अनुसूचित जनजाति आयोग
- गोपालसिंह ईडवा, अध्यक्ष वरिष्ठ नागरिक कल्याण बोर्ड
- मानवेन्द्रसिंह जसौल, अध्यक्ष राज्य स्तरीय सैनिक कल्याण सलाहकार समिति
- के.सी. विश्नोई, अध्यक्ष राज्य जीव जंतु कल्याण बोर्ड
- महेन्द्र गहलोत, अध्यक्ष केशकला बोर्ड
- मुमताज मसीह, अध्यक्ष सेंटर फॉर डवलपमेंट वॉलियंटरी सेक्टर
- पवन गोदारा, अध्यक्ष अन्य पिछड़ा वर्ग वित्त एवं विकास कार्पोरेशन
- भंवरू खान, अध्यक्ष, राजस्थान राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग
- राजेन्द्र सोलंकी, अध्यक्ष

राजस्थान राज्य पशुधन विकास बोर्ड
- संदीप चौधरी, अध्यक्ष बंजर भूमि एवं चरागाह विकास बोर्ड
- सीताराम लांबा, अध्यक्ष राजस्थान युवा बोर्ड
- उर्मिला योगी, अध्यक्ष राज्य विमुक्त घुमंतु एवं अर्ध घुमंतु कल्याण बोर्ड
- लक्ष्मण कणवासरा, अध्यक्ष भूदान यज्ञ बोर्ड
- मदन गोपाल मेघवाल, अध्यक्ष भीमराव अंबेडकर फाउण्डेशन, अंबेडकर पीठ
- भैरूलाल गुर्जर, अध्यक्ष श्री सांवलिया ट्रस्ट मंदिर
- अनिल शर्मा, अध्यक्ष राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास मण्डल
- रामसिंह राव, अध्यक्ष वंशावली संरक्षण एवं संवर्द्धन अकादमी
- महेश शर्मा, अध्यक्ष विप्र बोर्ड
- सचिन सरवेट, उपाध्यक्ष राजस्थान अनुसूचित जाति आयोग
- सुमेरसिंह राजपुरोहित, उपाध्यक्ष, राजस्थान गौ सेवा आयोग
- डूंगरराम गैदर, उपाध्यक्ष शिल्प एवं माटीकला बोर्ड
- सतवीर चौधरी, उपाध्यक्ष राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद
- राजेश टंडन, उपाध्यक्ष वरिष्ठ नागरिक कल्याण बोर्ड
- रामकिशोर बाजिया, उपाध्यक्ष राज्य स्तरीय सैनिक कल्याण सला. समिति
- सांवरमल महरिया, उपाध्यक्ष राज. धरोहर एवं संरक्षण प्रोन्नति प्राधिकरण
- चुन्नीलाल राजपुरोहित, उपाध्यक्ष राजस्थान राज्य पशुधन विकास बोर्ड
- सुशील पारीक, उपाध्यक्ष राजस्थान युवा बोर्ड
- किशनलाल जैदिया, उपाध्यक्ष राजस्थान सफाई कर्मचारी आयोग
- चतराराम देशबंधु, उपाध्यक्ष राज्य विमुक्त घुमंतु एवं अर्ध घुमंतु कल्याण बोर्ड
- मानसिंह गुर्जर, उपाध्यक्ष सेंटर फॉर डवलपमेंट वॉलियंटरी सेक्टर
- कीर्तिसिंह भील, उपाध्यक्ष मारवाड क्षेत्रीय जनजाति विकास बोर्ड
- उमाशंकर शर्मा, उपाध्यक्ष आयुक्त राजस्थान विशेषजन योग्यजन आयोग

पाठक पीठ

भूपाल नोबल्स कॉलेज के शताब्दी समारोह के बारे में पढ़कर खुशी हुई। महाराणा भूपाल सिंह जी व उनके वंशजों ने मेवाड़ में शिक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा, पर्यावरण एवं जल संरक्षण के लिए अनूठा काम किया। जिससे सदियों बाद भी जनता लाभान्वित हो रही है। भूपाल नोबल्स संस्थान 100 वर्ष की यात्रा पूरी कर रहा है, इससे बड़ी खुशी क्या हो सकती है। इस संस्थान ने अब तो विश्वविद्यालय का स्वरूप भी ग्रहण कर लिया है, जो महाराणा भूपाल सिंह जी का स्वप्न था। बधाई

प्रवीण सरूपरिया, उद्योगपति

'प्रत्यूष' फरवरी 22 के अंक में खेल–खिलाड़ी स्तंभ के तहत 'कप्तानी से विराट का विराम' आलेख पढ़ा। अच्छा लगा। इसमें विराट की तमाम उपलब्धियों का तो जिक्र है ही, साथ ही उन हालातों का भी बेहतर निरूपण है, जिनके परिप्रेक्ष्य में इस महान खिलाड़ी को राष्ट्रीय क्रिकेट टीम की कप्तानी से हाथ खींचने पड़े। रोहित शर्मा निश्चय ही उनके दायित्व को पूरा करेंगे।

सुनील पंचारिया
महाप्रबंधक

'प्रत्यूष' मासिक के फरवरी 22 के अंक में बढ़ती महंगाई से आम आदमी को होने वाली परेशानी को लेकर लिखा गया 'सम्पादकीय' सारगर्भित था। केन्द्र व राज्य सरकारों को इस दिशा में तत्काल ध्यान देकर राहत देने पर विचार करना चाहिए। गरीब और गरीबी की बातें तो सब कर रहे हैं, किंतु उनकी परेशानी को दूर करने पर अमल नहीं हो रहा। समय रहते राजनेताओं को अपनी जिम्मेदारी समझ लेना चाहिए।

अक्षत कपूर
व्यवसायी

डॉ. देशबंधु का आलेख 'विपरीत आहार सेहत के लिए घातक' फरवरी 22 के अंक का एक महत्वपूर्ण आलेख है। यदि इन बातों पर ध्यान दिया जाए तो तन–मन सदैव स्वस्थ रहेगा। परस्पर विपरीत प्रकृति पदार्थों का साथ–साथ सेवन करना निश्चय ही स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। आलेख अनुकरणीय व संग्रहणीय है।

नवीन चौधरी
सिविल इंजीनियर

कैसा लगा यह अंक

प्रत्यूष

इस अंक में कौन सा आलेख आपको ज्यादा पसंद आया। आप किन विषयों पर आलेख पढ़ना ज्यादा पसंद करेंगे? किस विषय पर आप हमें अपना मौलिक आलेख, शोध, कविता, कहानी भेजना चाहेंगे। कृपया हमें लिखें। आपके रचनात्मक सुझावों का सदैव स्वागत होगा।

कई बीमारियों की औषधि है धनिया

भोजन में स्वाद बढ़ाने वाला धनिया खाने के प्रति रूचि बढ़ाता है और पोषण भी प्रदान करता है। लेकिन साबुत और पत्ते वाले धनिये का अधिक मात्रा में प्रयोग हानिकारक भी हो सकता है। अधिक मात्रा में इनके उपयोग से पेटदर्द, सूजन, रेशेज जैसी समस्याएं हो सकती हैं। साथ ही त्वचा पर सनबर्न होने की आशंका बढ़ जाती है। धनिये के इस्तेमाल मसाले ही नहीं, अनेक औषधीय रूपों में भी किया जाता है। हरे धनिये और सूखे धनिये दोनों में ही अलग-अलग तरह के गुण और खूबियां हैं, जो इन्हें खास बनाती है। पोटेशियम, आयरन, विटामिन, फॉलिक एसिड, मैग्नीशियम और कैल्शियम, प्रोटीन, फाइबर, कार्बोहाइड्रेट, मिनरल, कैरोटीन आदि से भरपूर धनिये का सेवन जरूर करना चाहिए।

प्राची गुप्ता

कोलेस्ट्रॉल को करे काबू

धनिये में कई ऐसे एसिड मौजूद होते हैं, जो रक्त में कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने में असरदार होते हैं। कोलेस्ट्रॉल दो तरह के होते हैं एलडीएल और एचडीएल, जिसमें से एलडीएल खराब होता है और एचडीएल कोलेस्ट्रॉल अच्छा होता है। धनिये के इस्तेमाल से हम बुरे कोलेस्ट्रॉल को काबू में रख सकते हैं।

पाचन की समस्या

पत्ती वाली धनिये में अधिक फाइबर होता है, इसलिए इसका सेवन करने से पाचन तंत्र ठीक रहता है और पेट की बीमारियां भी प्राय: नहीं होतीं। धनिये की पत्ती का सेवन पेट में एंजाइम और पाचन रस के उचित स्राव में मदद करता हैं, जिससे शरीर की पाचन प्रक्रिया दुरुस्त रहती है और स्वस्थ रहते हैं।

एनीमिया से बचाए

धनिये में आयरन की मात्रा भरपूर पाई जाती है। इसके नियमित सेवन से एनीमिया को दूर करने में मदद में मिलती है। इसके साथ ही खून की कमी, सांस की तकलीफ जैसी समस्याएं भी दूर रहती हैं।

आंख की देखभाल

धनिये में एंटीऑक्सीडेंट्स, कैल्शियम, विटामिन और फॉस्फोरस जैसे मिनरल्स पाए जाते हैं, जो आंखों के लिए फायदेमंद होते हैं। ये तत्व आंखों की समस्या से निजात दिलाते हैं, वहीं इसके इस्तेमाल से आंखों की रोशनी भी बेहतर होती है।

ब्लड प्रेशर पर नियंत्रण

खड़ा धनिया और हरा धनिया दोनों ही के सेवन से ब्लडप्रेशर को नियंत्रित किया जा सकता हैं, क्योंकि इसमें कैल्शियम और आयरन के अलावा और भी कई तत्व मौजूद होते हैं, जो नर्वस सिस्टम व तनाव को नियंत्रित करते हैं।

रूप निखारे

त्वचा के लिए फायदेमंद: धनिये में मौजूद एंटीसेप्टिक, एंटीफंगल और एंटी ऑक्सिडेंट गुण त्वचा संबंधी रोगों जैसे खुजली, रेशेज, सूजन, फंगल इंफेक्शन आदि से छुटकारा दिलाते हैं।

पिम्पल्स दूर करे : पत्ती वाले धनिये का सेवन करने से चेहरे में ग्लो आता है, क्योकि इसमें आयरन की मात्रा अधिक होने से शरीर में हीमोग्लोबिन अधिक बनता है। इससे पिम्पल्स, ब्लैकहेड्स आदि की समस्या दूर होती है।

और भी तकलीफें करे दूर

- अगर लगातार जी मिचला रहा हो या उल्टियां आ रही हो तो ऐसी स्थिति में धनिये की पत्ती का रस निकालकर उसका 1–1 चम्मच सेवन करने से इस समस्या से बड़ी आसानी से छुटकारा मिल सकता है।
- मुंह में छाले निकल आए हों तो हरे धनिये के रस से कुल्ला करने से तत्काल राहत मिलती है।
- अगर बाल झड़ने की समस्या हो तो इसे रोकने के लिए 50 ग्राम धनिये में थोड़ा पानी मिला लें और उसे अदरक के साथ पीस लें और फिर इसमें से रस निकालकर बालों पर लगाएं और करीब 30 मिनट या एक घंटे तक लगा रहने दें। इसके बाद इसे शैम्पू या पानी से अच्छी तरह से धो लें। ऐसा हफ्ते में 2 से 3 बार करने से बाल झड़ने बंद हो जाते हैं।
- पत्ते वाले धनिए का 1 या 2 चम्मच रस ताजी छाछ में मिलाकर लेने से पाचन की समस्या जैसे अपचन, जी मिचलाना, बवासीर, पेचिश, हेपेटाइटिस तथा अल्सर की वजह से पेट में होने वाले दर्द से निजात मिलती है।
- धनिये के बीज में विटामिन सी के साथ ही जीवाणुरोधी गुण होते हैं। इसलिए सर्दी–जुकाम में इन बीजों को उबालकर इनका पानी पीने से लाभ होता है।

शुद्ध शाकाहारी भोजन

रोशनलाल पालीवाल

हमारे यहां सभी तरह के शाकाहारी भोजन व्यवस्था के ऑर्डर लिए जाते हैं।

पालीवाल शिव भोजनालय

3, चेतक मार्ग, उदयपुर - 313001 (राज.)

Phone : 0294-2429014, Mobile : 94603-24836

अध्यात्म व रहस्यवाद का प्रतीक कुरुक्षेत्र

रेणु शर्मा

हरियाणा राज्य स्थित कुरुक्षेत्र न सिर्फ पर्यटन बल्कि ऐसा तीर्थस्थल भी है, जिसका हिंदू-सिख के लिए समान और विशेष महत्व है। अनेक सिख गुरुओं ने इस पवित्र स्थल की यात्रा की, खासतौर पर सूर्यग्रहण के अवसर पर देशभर से लाखों हिंदू धर्मावलम्बी यहां स्थित ब्रह्म सरोवर में स्नान करने के लिए जुटते हैं।आदि गुरुग्रंथ में गुरु अमरदास की कुरुक्षेत्र यात्रा को इस तरह दर्ज किया गया है। अभिजीत नक्षत्र के दौरान सच्चे गुरु की छवि को स्नान करते देखा, तो बुराई का मेल धुल गया और अज्ञानता का अंधेरा छंट गया। जिन्होंने गुरु को देखा उनकी अज्ञानता दूर हो गई और उनके दिन नूर से रोशन हो गए और उन्होंने सर्वव्यापी, अमिट ईश्वर को पा लिया। रचनाकार ईश्वर ने स्वयं यह शुभ समय बनाया है, जब सच्चे गुरु कुरुक्षेत्र के मेले में गए थे। अभिजीत के दौरान सच्चे गुरु के दर्शन ही हमारा स्नान था।

कुरुक्षेत्र में अमावस के साथ वह अभिजीत नक्षत्र का अवसर था। जिसे अभिच या स्नान का उत्सव कहते है। सूर्यग्रहण के दौरान गुरु अमरदास की पवित्र छाया के सीाी को दर्शन हुए, जो पूजने योग्य है, क्योंकि तीनों लोक वहां मिल रहे थे। गुरु अमर दास ने कुरुक्षेत्र में अनेक दिन गुजारे और उनके गीतों व उपदेशों ने बहुत लोगों को अपने ओर आकर्षित किया, खासकर इसलिए कि आसान भाषा में होने के कारण साधारण लोग उन्हें समझ रहे थे। गुरु ने अंधविश्वास व धार्मिक आडंबरों और रीति-रिवाजों की निंदा की, क्योंकि इनसे लोगों के जीवन में अनावश्यक जटिलताएं आ रहीं थीं। इससे रूढ़िवादी नाराज हो गए और उन्होंने गुरु पर आरोप लगाए कि वह अशुद्ध भाषा में बानी रच रहे हैं। इसका गुरु ने सही व सटीक उत्तर दिया, कुएं का पानी ज्यादा से ज्यादा कुछ ही खेतों की सिंचाई कर सकता है, लेकिन बारिश का पानी बिना किसी भेदभाव के पूरी जमीन को सींचता है। गुरु की बानी संस्कृत जानने वालों के लिए कुएं का पानी नहीं थी, बिना किसी भेदभाव के सभी लोगों के लिए बारिश थी, इसलिए उनके उपदेशों के प्रति बड़ी संख्या में लोग आकर्षित हुए। अपने पूर्ववर्ती गुरुओं की शिक्षा को दूर-दूर तक पहुंचाने के लिए गुरु हरगोबिंद ने धर्म प्रचार यात्रा अमृतसर से आरंभ की, भारत में अनेक जगहों का भ्रमण करने व हजारों मील का सफर तय करने के बाद वह सूर्यग्रहण के दौरान कुरुक्षेत्र पहुंचे और सिखों के जत्थे से मिले। वह यह देखकर खुश हुए कि उन लोगों ने गुरु नानक के संदेश के असल व मूल तत्व को समझ लिया है।

शानदार गुरुद्वारे का निर्माण

छठे गुरु, गुरु हरगोबिंद को समर्पित शानदार व वैभवशाली चीविन पटसाही गुरद्वारे का निर्माण कुरुक्षेत्र, बस स्टैंड से लगभग दो किमी के फासले पर किया गया है। शुरू में यहां एक चबूतरा उनकी याद में बनाया गया था, लेकिन 1909 में गुरुद्वारे का निर्माण किया गया। 1947 में देश विभाजन के दौरान पाकिस्तान से बड़ी संख्या में उजड़े सिखों व हिंदूओं को अस्थाई शरण यहां मिली और फिर वह आसपास के गांवों में बस गए।

Happy Holi

Roop Lal Patel
Managing Director
09828101982

Jitendra Patel
Director
09983300618

Successful
Achievement
of 22 glistening
years.....

PATEL ENTERPRISES
An ISO 9001- 2008 Certified Company
Zinc Chouraha, Debari, Udaipur (Raj.)
Manufacturer of
Super phosphate Plants
& Machineries

PATEL PHOSCHEM (P) LTD.
Coming up as a Manufacturer of Fertilizer &
Chemical Products
At Village- Umra, Udaipur (Raj.)

113, 1ST Floor, Ostwal Plaza, Airport Road, Opp.- Rajasthan Patrika,
Udaipur- 313 001 (Raj.) Phone: 0294- 2492146, 3261982
Website: www.patelenterprises.net E-mail: rooplalpatel@yahoo.co.in

ऊर्जा की रात्रि है महाशिवरात्रि

महाशिवरात्रि साधन को आध्यात्मिक शिखर पर ले जा सकती है, अगर वह इस दिन प्रकृति से सही तादात्म्य स्थापित कर ले। इस दिन साधक में सहज रूप से ही ऐसी ऊर्जा निर्मित होती है, जो उसे शिव के तीसरे नेत्र के समान एक नई आध्यात्मिक दृष्टि देने में सक्षम हैं।

चन्द्रमास के कृष्ण पक्ष का 14वां या अमावस्या से पहले वाला दिन शिवरात्रि के नाम से जाना जाता है। एक पंचांग वर्ष की सभी बारह शिवरात्रियों में से महाशिवरात्रि सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है ।इस रात पृथ्वी के उत्तरी गोलार्द्ध की दशा कुछ ऐसी होती है कि मानव शरीर में सहज रूप से ऊर्जा ऊपर की ओर चढ़ती है। यह एक ऐसा दिन होता है, जब प्रकृति इंसान को उसके आध्यात्मिक शिखर की ओर ढकेल रही होती है। इस घटना का उपयोग करने हेतु हमारी परंपरा में एक खास त्योहार बनाया गया है। इसे पूरी रात मनाने का मूल उद्देश्य यह तय करना है कि ऊर्जा का यह प्राकृतिक चढ़ाव अपना रास्ता पा सके। महाशिवरात्रि की पूरी रात आपको अपना मेरुदंड सीधा रखना चाहिए और जगे रहना चाहिए। जो अध्यात्म मार्ग पर हैं, उनके लिए महाशिवरात्रि बहुत महत्वपूर्ण है। जो पारिवारिक जिंदगी जी रहे हैं, उनके लिए भी यह बहुत महत्वपूर्ण है। महत्वाकांक्षी इनसानों के लिए भी यह एक अहम दिन है। पारिवारिक जिंदगी जी रहे लोग महाशिवरात्रि को शिव की शादी की सालगिरह के रूप में मनाते हैं। शिव ने इस दिन अपने सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त की थी, सांसारिक महत्वाकांक्षा वाले लोग इसे उस रूप में मनाते हैं। लेकिन तपस्वियों के लिए यह वह दिन है, जब शिव कैलाश के साथ एक हो गए थे, जब वे पर्वत की तरह निश्चल और पूरी तरह शांत हो गए थे।

पूर्व के ऋषियों और मनीषियों ने इसे पहचाना, इसलिए उन्होंने इसका उपयोग एक साधना दिवस के रूप में किया। आध्यात्मिक प्रक्रिया को तेज करने के लिए इसे परंपरा का एक हिस्सा बना दिया। इसके अलावा शिव का

सद्गुरु जग्गी वासुदेव

वर्णन हमेशा से त्रिअंबक के रूप में किया जाता है-जिनकी तीन आंखें हैं। तीसरी आंख वह आंख है, जिससे दर्शन होता है। आपकी दो आंखें है, ये मन को सभी तरह की अनर्गल चीजें पहुंचाती है। ये दो आंखें सत्य को देख नहीं पाती हैं, अत: एक तीसरी आंख, एक गहरी भेदन शक्ति वाली आंख को खोलना होगा। आज के लिए नुस्खा यह है कि आप समानांतर या क्षैतिज अवस्थाओं में न लेटें, हमेशा मेरुदंड सीधा रखें। केवल सीधा रखना ही काफी नहीं हैं, हमें एक ऐसी अवस्था में रहना होगा जहां हम, हम नहीं रह जाते। शिव का अर्थ है - 'वह जो नहीं है।' आज की रात इसे अपने साथ होने दें, स्वयं को खो दें। फिर जीवन में एक नई दृष्टि खुलने की संभावना पैदा होगी, जिससे आप जीवन को वैसे देख पाएंगे, जैसा यह है। ***डॉ. सरस***

अलौकिक आंनद के स्रोत

अध्यात्म की राह पर चलने वाले साधकों की यात्रा बड़ी दुरूह मानी जाती है। अनजानी राह की भटकन, शारीरिक, मानसिक और मनोवैज्ञानिक सीमाएं, मुश्किल हालातों में मंसूबों का डगमगा जाना राह में न जाने कितनी उलझनें आती हैं, पर अगर किसी सद्गुरु का मार्गदर्शन और कृपा का सानिध्य मिल जाए तो यात्रा सुगम और सहज हो सकती है। परम प्राप्ति की चाह रखने वाला साधक हर उस कुदरती घटना को, हर उस अवसर को, अपनी यात्रा का सोपान बना लेता है, जो उसे आध्यात्मिक ऊंचाई प्रदान करती है और परम के करीब ले जाती है। एक ऐसा ही अवसर है महाशिवरात्रि। महाशिवरात्रि का सीधा संबंध शिव से है, जो न केवल आदि योगी हैं, बल्कि अलौकिक आनंद के आदि स्रोत्र भी हैं। अगर महाशिवरात्रि के महत्व को समझना है तो शिव को समझना महत्वपूर्ण हो जाता है।

रुद्राक्ष की उत्पत्ति

भगवान शिव ने रुद्राक्ष उत्पत्ति की कथा पार्वती को कही है। एक समय भगवान शिवजी ने एक हजार वर्ष तक समाधि लगाई। समाधि में से व्युत्थान होने पर जब उनका मन ब्राह्य जगत में आया, तब जगत के कल्याण की कामना वाले महादेव ने अपनी आंखें बंद की। तब उनके नेत्र में से जल के बिंदु पृथ्वी पर गिरे। उन्हीं से रुद्राक्ष के वृक्ष उत्पन्न हुए और वे शिव की इच्छा से भक्तों के हित के लिए एक समग्र देश में फैल गए। उन वृक्षों पर जो फल लगे वे ही रुद्राक्ष हैं। जिन्हें साधनापूर्वक धारण करने से मानव के जीवन पथ में आने वाली बाधाएं स्वत: हट जाती हैं।

मुगल शासक भी उठाते थे होली का आनंद

फिरोज अहमद शेख

जब भारत में मुगलिया शासन का उदय हुआ, तब भी यह त्योहार रंगों की बहार व आमोद-प्रमोद में डूबकर मनाया जाता था। मुगल शासकों की रंग-बिरंगी होली भी अपनी एक अनूठी छाप यहां के लोगों पर छोड़ गई।

बाबर के भारत आगमन और हुमायूं के गद्दीनशीन होने तक यह त्योहार उन पर इतना रंग नहीं चढ़ा सका जितना मुगल साम्राज्य की तीसरी पीढ़ी के अकबर शासन काल के दौरान परवान चढ़ा। अकबर ने हिंदू-मुस्लिम प्रेम व भाईचारे की एक ऐसी बिसात बिछाई कि वह ईद में जहां हिंदुओं को शामिल करते, वहीं होली के त्योहार में वह अपनी महारानी जोधाबाई व दास-दासियों के साथ अन्य महलों के कर्मचारियों को साथ लेकर जमकर होली खेलने का लुत्फ उठाते थे। दोनों ओर से खेली जाने वाली होली दोनों संप्रदायों के बीच प्रेम व सद्भावना की अटूट मिसाल थी। मुगल सम्राट जहांगीर जो अपने पिता अकबर से भी ज्यादा उदार दिल था, होली का पर्व आने पर दास-दासियों व बेगमों के साथ नाच-गाकर एक-दूसरे पर रंगों से भरी पिचकारियां छोड़कर खुश होता था। अबीर व गुलाल के टोकरे भरकर वह अपने दरबारियों को साथ लेकर हिंदुओं को रंग-अबीर मलकर मुबारकबाद देता था। उस समय यह पता नहीं चलता था कि कौन हिंदू है और कौन मुसलमान। सभी रंगों से सराबोर दिखाई देते थे। मुगल बादशाह शाहजहां के शासनकाल में होली को परम्परागत तरीके से मनाया जाता

था। शाहजहां अपनी बेगम मुमताज महल के साथ दिनभर आने-जाने वालों के साथ रंग खेलता था। वह सभी से प्रेम पूर्वक गले मिलता था।

सम्राट मुहम्मद शाह तो इतने विनोदी स्वभाव के थे कि वे होली का पर्व मनाने के लिए ढिंढोरा पिटवा देते थे। वे हरम से निकलकर खुले मैदान में नाचते-गाते हुए होली खेलते थे। उनके राज में होली का पर्व दो दिन तक पूरे जोश के साथ मनाया जाता था। होली का भरपूर मजा जहां मुगल शासकों ने उठाया तो नवाब भी पीछे न रहे। लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह दिल के काफी उदार थे।

नवाबों की तो बात ही निराली है

होली के रोज नवाब वाजिद अली छोटे नवाबों को इस रोज अपने यहां बेगमों एवं दासियों के साथ आने का न्योता देते थे। सभी के एकत्र हो जाने के बाद वे अपने महल के लॉन में बड़े-बड़े कड़ाहों में रंग भरवाकर सामूहिक रूप से एक-दूसरे पर डलवाया करते थे। गुलाल व अबीर की धमचक से महल के आंगन लाल सुर्ख हो जाते थे। होली की मस्ती में डूबे नवाब वाजिद अली सायं के वक्त नए वस्त्र पहनकर एक-दूसरे पर इत्र लगाकर गले मिलते थे। इस दिन नवाब की ओर से स्वादिष्ट व लजीज भोजन का प्रबंध होता था। जिसमें सभी वर्ग शिरकत करते थे। भोजन से पूर्व नवाब स्वयं भांग छानकर दूसरों को भी ठंडाई पिलाते थे। नवाब असाफुद्दौला की तो बात ही छोड़ दीजिए। वे लखनऊ के नवाब होने के नाते इस परम्परा का निर्वाह जोर-शोर से करते थे और वे समूचे लखनऊ में हिंदू-मुस्लिमों को सायंकाल अपने द्वारा लगवाये गए मेले में आमंत्रित करते थे। मेले में जमकर रंगों का आदान-प्रदान होता था। अबीर व गुलाल एक दूसरे को लगाकर वे गले मिलते थे। हिंदू भी नवाब साहब को तोहफे व मिष्ठान भेंट करते थे।

संगम विश्वविद्यालय
सार्थक शिक्षा वही जो कालजयी हो: सोनी

भीलवाड़ा/प्रत्यूष ब्यूरो। संगम विश्वविद्यालय का आठवां दीक्षांत समारोह मुख्य अतिथि नीति आयोग के पूर्व विशेष सचिव यदुवेन्द्र माथुर व विश्वविद्यालय के चेयरपर्सन रामपाल सोनी की अध्यक्षता में 4 फरवरी को उल्लास व उत्साह से संपन्न हुआ। जिसमें 352 विद्यार्थियों को डिग्री तथा 443 को डिप्लोमा सर्टिफिकेट प्रदान किए गए। कोरोना संक्रमण के चलते समारोह ऑनलाइन मोड में आयोजित हुआ। अतिथियों के स्वागत के साथ ही प्रारंभ में कुलपति प्रो. करुणेश सक्सेना ने विश्वविद्यालय का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। जिसमें उन्होंने सुशासन एवं गुणवत्ता, शैक्षणिक उपलब्धियों, कौशल विकास तथा गैर शैक्षणिक कार्यक्रमों की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस शैक्षणिक वर्ष में 132 नेशनल एवं इंटरनेशनल पेपर, 32 से ज्यादा पुस्तकों का प्रकाशन, 50 से ज्यादा वेबीनार तथा 5 कंसल्टेंसी एवं रिसर्च प्रोजेक्ट, 7 पेटेंट आदि किए गए। समारोह को विशिष्ट अतिथि हरेन्द्र महावर आईपीएस, प्रो. पवनकुमार सिंह तथा डॉ. हिमांशु कुमार मेलबर्न व जिला कलक्टर आशीष मोदी ने भी वर्चुअल संबोधित किया। मुख्य अतिथि माथुर ने कहा कि विद्यार्थियों को मोमबत्ती की तरह तैयार होना है, जो दोनों ओर से जलकर घर-समाज व राष्ट्र को रोशनी देती है। विश्वविद्यालय के चेयरपर्सन रामपाल सोनी ने कहा कि शिक्षा वही सार्थक है, जो कालजयी हो। रजिस्ट्रार प्रो. राजीव मेहता ने बताया कि इस वर्ष कुल 352 छात्र-छात्राओं को डिग्री तथा 443 को डिप्लोमा सर्टिफिकेट प्रदान किए गए। 23 छात्राओं को गोल्ड व सिल्वर मेडल दिए गए। जबकि 9 छात्रों ने भी इन्हें हासिल किया। समारोह में मुख्य अतिथि यदुवेन्द्र माथुर को मानद डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई। विश्वविद्यालय बोर्ड के सदस्य अनुराग सोनी ने इस गरिमामय व भव्य समारोह के लिए विद्यार्थियों व विश्वविद्यालय परिवार को बधाई दी।

वरिष्ठ आइएएस अधिकारी ऊषा शर्मा बनी मुख्य सचिव

जयपुर/प्रत्यूष ब्यूरो। भारतीय प्रशासनिक सेवा की 1985 बैच की आइएएस ऊषा शर्मा ने 31 जनवरी को राजस्थान की मुख्य सचिव का पदभार ग्रहण किया। वे जून 2023 तक इस पद पर रहेंगी। उन्हें निवर्तमान मुख्य सचिव निरंजन आर्य ने कार्यभार सौंपा। प्रदेश में इस पद पर पहुंचने वाली ऊषा दूसरी महिला हैं। उनके पास उदयपुर स्थित खान एव खनिज निगम लि. की अध्यक्ष का अतिरिक्त कार्यभार भी रहेगा। ऊषा चार्ज संभालते ही मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से मिलने उनके आवास पर गईं। उन्होंने पधारो म्हारे देस कहकर नए मुख्य सचिव का स्वागत किया। ऊषा से पहले महिला मुख्य सचिव के रूप में कुशलसिंह ने 7 माह तक काम किया था। ऊषा पदभार ग्रहण करने दिल्ली से जयपुर पहुंची। वे केन्द्र सरकार में प्रतिनियुक्ति पर थीं। ऊषा शर्मा राजस्थान काडर के वरिष्ठ आइएएस अधिकारी बीएन शर्मा की पत्नी हैं। जो अभी राजस्थान विद्युत विनियामक आयोग के अध्यक्ष हैं।

प्रतिनियुक्ति से दस वर्ष बाद लौंटी: भारतीय प्रशासनिक सेवा की 1985 बैच की आइएएस ऊषा शर्मा ने राजस्थान काडर मिलने के बाद अपने करियर की शुरुआत 15 जून 1989 को अलवर एसडीएम के पद से की। इसके बाद वे बूंदी और अजमेर कलक्टर रहीं। लगभग तीन महीने जयपुर विकास प्राधिकरण की आयुक्त रहने के बाद उद्योग आयुक्त जैसे महत्वपूर्ण पद की जिम्मेदारी संभाली। वर्ष 2007 में राज्य सरकार ने राजस्थान पर्यटन निगम की कमान सौंपी। फिर पर्यटन आयुक्त बनीं और फिर 2012 में केन्द्रीय प्रतिनियुक्ति पर दिल्ली चली गई। वहां पर्यटन मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव और पुरातत्व विभाग की महानिदेशक रहीं। राजस्थान आने से पूर्व वे युवा मामलात सचिव पद पर कार्यरत थीं। अब दस साल बाद वापस राजस्थान लौटी हैं। उन्होंने कहा कि उनको पता है कि आम आदमी का दर्द क्या होता है। एसडीओ और कलक्टर पद पर रहते इस दर्द को करीब से देखा है। प्रत्येक स्तर पर जनसुनवाई का सिस्टम इस तरह विकसित करेंगी, जिससे प्रशासन व कामकाज में सकारात्मकता आए और इसका सीधा फायदा आम आदमी को मिले। पदभार संभालने के बाद उन्होंने मुख्यमंत्री का आभार जताते हुए कहा कि दिल्ली में रहते हुए भी मैं कभी राजस्थान से दूर नहीं रही। पधारो म्हारे देश हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है, इसके तहत यहां ज्यादा से ज्यादा निवेश लाने के लिए हर किसी का स्वागत करेंगे। महिला को सीएस बनाने पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का आभार प्रकट करना चाहती हूं। महिला उत्थान और फ्लैगशिप योजना को बढ़ावा दूंगी। भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाना मेरी प्राथमिकताओं में से एक होगा।

जयपुर में बनेगा दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टेडियम

जयपुर। जयपुर के समीप चौंप गांव में बनने वाले दुनिया के तीसरे सबसे बड़े क्रिकेट स्टेडियम की शिलान्यास पट्टिका का 5 फरवरी बसंती पंचमी को मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने वर्चुअल अनावरण किया। बीसीसीआई अध्यक्ष सौरव गांगुली, सचिव जय शाह, उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला, कोषाध्यक्ष अरुण धूमल, आईपीएल चेयरमैन बृजेश पटेल, राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी और केबिनेट मंत्री डॉ. महेश जोशी भी विशिष्ट अतिथि के रूप में वर्चुअल शामिल हुए। सचिव महेन्द्र शर्मा ने इस सौगात के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने कहा कि ये खुशी और गौरव की बात है कि राजस्थान के खिलाड़ी भी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में जगह बना रहे हैं। राजस्थान में अब प्रोफेशनल क्रिकेट का माहौल बन रहा है। उन्होंने बीसीसीआई अध्यक्ष सौरव गांगुली और सचिव जय शाह से भविष्य में आईपीएल और अंतरराष्ट्रीय

मैचों की मेजबानी में राजस्थान को प्राथमिकता देने की अपील की। मुख्यमंत्री ने कहा कि दस साल पहले आरसीए के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी ने यह सपना देखा था, जिसे वर्तमान राज्य सरकार और बीसीसीआई के सहयोग से पूरा करने जा रहे हैं।

खास बातें

- **100** एकड़ में बनेगा स्टेडियम
- **280** करोड़ खर्च होंगे पहले चरण में
- **75** हजार होगी कुल दर्शक क्षमता
- **24** माह में पहला चरण पूरा करने का लक्ष्य

प्रेरणादायक उपदेश

इस गुरुद्वारे के मुख्य भवन में 6 फीट ऊंची चौकी पर ऊंची छत का सत्संग हॉल है। अलंकृत कमल गुम्बद के साथ जहां पवित्र गुरु ग्रंथसाहिब छतरी युक्त संगमरमर के सिहांसन पर विराजमान हैं। गुरु का लंगर, सरोवर और रहने की जगह सभी तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए उपलब्ध है। 1673 में नवें गुरु, गुरु तेग बहादुर कुरुक्षेत्र के निकट कैथल में आए थे। गुरु की यात्रा व उपदेशों ने कैथल के लोगों को गहरा प्रभावित किया। उस समय तक इस क्षेत्र में सिख धर्म का अनुसरण केवल कुछ ही परिवारों ने किया था, लेकिन गुरु तेग बहादुर की यात्रा के बाद यहां सिख धर्म के अनुयायियों की संख्या काफी बढ़ गई। कैथल से गुरु पेहोवा गये, जहां उन्होंने श्रोताओं को प्रेरणादायक उपदेश दिए। पेहोवा से गुरु पास के ही एक छोटे से गांव बैना गए। बैना से गुरु सूर्यग्रहण के अवसर पर कुरुक्षेत्र गए। गुरु पहले गुरु नानक, गुरु अमरदास व गुरु हरगोबिंद के सम्मान में बने गुरुद्वारों की यात्रा पर गये। कुरुक्षेत्र में गुरु का स्वागत हिंदू पुजारियों व अनगिनत अनुयायियों ने सम्मान व उत्साह के साथ किया।

लंगरों का आयोजन

कैथल, पेहोवा व कुरुक्षेत्र में गुरु तेग बहादुर ने लंगरों का आयोजन किया और खुलकर जरूरतमंदों व ब्राह्मणों में खाना व कपड़े वितरित किए। उदार गुरु ने लोगों को आशीर्वाद का पत्र या हुकुमनामा दिया जो कि ताम्बे की प्लेट पर खुदा हुआ था। सूर्यग्रहण के दौरान कुरुक्षेत्र पवित्र शक्ति का केन्द्र बन जाता है और ऐसा महाभारत के युग से हो रहा है। जब युद्ध से बचना असंभव हो गया था तो तय किया गया कि ज्येष्ठ अमावस्या के शुभ दिन लड़ाई की शुरुआत की जाए, उस दिन सूर्यग्रहण था।

शोध

बुढ़ापे के अहसास का सेहत पर कुप्रभाव

हम सभी जानते हैं कि सोच से स्वास्थ्य का भी संबंध है। एक नए अध्ययन में पाया गया है कि बुढ़ापे के नकारात्मक पहलुओं का अहसास शारीरिक स्वास्थ्य पर असर डालता है। साथ ही यह तनाव से लड़ने की क्षमता को भी प्रभावित करता है। यह शोध जर्नल्स ऑफ जेरंटालाजी में प्रकाशित हुआ है।

अमेरिका में ऑरेगन स्टेट यूनिवर्सिटी (ओएसयू) के शोधकर्ताओं ने 100 दिनों से ज्यादा समयावधि में बुजुर्गों के दैनिक सर्वे डेटा का अध्ययन किया। इस दौरान पाया कि बुढ़ापे को लेकर जिन लोगों की धारणा नकारात्मक थीं उनमें तनाव अधिक पाया गया। ओएसयू के कॉलेज ऑफ पब्लिक हेल्थ एंड ह्यूमन साइंस की शोधार्थी तथा अध्ययन की मुख्य लेखिका डकोटा विट्जेल का कहना है कि बुढ़ापे के बारे आपके अच्छे अहसास स्वास्थ्य पर बेहतर असर डालते हैं। इसमें इससे कोई फर्क नहीं पड़ा कि आप कितना तनाव झेलते हैं। उन्होंने कहा कि तनाव को लेकर किए गए शोध में पाया गया कि दैनिक और दीर्घावधिक तनाव का असर स्वास्थ्य पर कई लक्षणों के रूप में प्रकट होता है। इनमें हाई ब्लर्ड प्रेशर, हार्ट डिजीज तथा संज्ञानात्मक क्षमता का ह्रास भी शामिल हैं।

105 बुजुर्गों पर सर्वे

शोधकर्ताओं ने अध्ययन के लिए 52 से 88 आयु वर्ग के 105 बुजुर्गों का ऑनलाइन सर्वे किया। इस दौरान उनकी जिंदगी और सामाजिक अनुभव जानने की कोशिश की गई। इसके आधार पर धारणा आधारित तनाव और स्वास्थ्य पर पड़े उसके प्रभाव का 100 दिनों तक आकलन किया गया। साथ ही उनसे बुढ़ापे को लेकर भी प्रश्न पूछे गए।

नकारात्मकता ठीक नहीं

अध्ययन के दौरान पाया गया कि जिन लोगों में बुढ़ापे को लेकर बुरे अहसास थे, उनमें धारणा आधारित तनाव का स्तर भी ज्यादा था। वहीं सकारात्मक अहसास वाले लोगों में बीमारियों के बहुत कम लक्षण थे। उल्लेखनीय यह कि जिस दिन बुढ़ापे को लेकर ज्यादा नकारात्मक भाव थे, उस दिन सामान्य दिनों की तुलना में स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों के लक्षण तीन गुना अधिक थे। दूसरे शब्दों में कहीं तो बुढ़ापे का सकारात्मक अहसास तनाव का स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव के खिलाफ सुरक्षात्मक असर पैदा करता है।

घर-प्रतिष्ठान की सही दिशा में लगाएं बिजली के उपकरण

नरेश सिंघल,

घरों, दुकानों अथवा औद्योगिक प्रतिष्ठानों में बिजली के उपकरणों को प्रायः हम अपनी सुविधा के अनुसार स्थापित कर देते हैं। अगर इन्हें अनुकूल दिशा में लगाया अथवा रखा जाए तो जीवन में सहूलियत रहती है और स्वास्थ्य भी प्रभावित नहीं होता।

चाहे बिजली का मीटर हो या फ्रिज, वॉशिंग मशीन, कम्प्यूटर, टीवी या फिर बिजली के अन्य उपकरण अमूमन लोग इन्हें अपनी सहूलियत के अनुसार घर-व्यावसायिक स्थल में स्थान देते हैं। लेकिन वास्तु कहता है कि इन्हें अगर अनुकूल दिशा में स्थान दिया जाए तो जीवन में अधिक सहूलियत रहती है। आशय यह है कि बिजली के उपकरणों का सही दिशा में नहीं होना, सीधे-सीधे हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।

जिस प्रकार ईशान कोण यानी उत्तर-पूर्व दिशा का संबंध आर्थिक समृद्धि से माना जाता है उसी प्रकार आग्नेय कोण अर्थात दक्षिण पूर्व दिशा का संबंध बहुत हद तक स्वास्थ्य से होता है। अग्नि तत्व का प्रतिनिधित्व करने वाली यह दिशा बिजली के उपकरणों को रखने के लिए सर्वोचित समझी जाती है। घर में प्रवेश द्वार बनाने के लिए या बोरवेल एवं शयन कक्ष बनाने के लिए जिस तरह हम वास्तु नियमावली का अनुसरण करते हैं, उसी प्रकार बिजली उपकरणों को स्थापित करने के लिए भी वास्तु सिद्धांतों का ध्यान रखना बहुत आवश्यक है।

वास्तु की दृष्टि से महत्व की बात आती है तो उत्तर पूर्व के बाद बारी दक्षिण पूर्व की है। इस कोण में वास्तुदोष से मुक्त रखना अत्यंत आवश्यक होता है। यह दिशा अग्नि तत्व का स्थान है। इसलिए बिजली के सभी उपकरण और मीटर, बिजली का नियंत्रण और वितरण यहीं से होना चाहिए। ऐसा करके अग्नि तत्व को संतुलन में रखा जा सकता है।

विदित हो कि अग्नि तत्व का असंतुलित होना कई किस्म के रोगों को आमंत्रित करना है। अगर इन दोषों का निवारण न किया जाए तो कई बार साधारण बीमारियां भी गंभीर रूप ले लेती हैं और परिवार के सदस्यों को असहनीय पीड़ा सहन करनी पड़ती है।

बिजली के उपकरण जैसे इनवर्टर, ट्रांसफार्मर, फ्रिज आदि ऊष्मा यानी हीट उत्पन्न करते हैं, इसलिए वास्तुशास्त्र में इनके लिए आग्नेय कोण यानी दक्षिण पूर्व को उचित स्थान बताया गया है। रसोईघर के लिए भी यह दिशा उपयुक्त मानी जाती है।

आइए जानते हैं आग्नेय कोण से जुड़े सामान्य वास्तुदोष ओर उनके निवारण के उपाय-

अगर कोई व्यक्ति इस दिशा के गलत प्रयोग के कारण वास्तु दोषों से ग्रस्त किसी मकान में रह रहा है तो नीचे दिए गए सुझावों को अपनाकर उन दोषों के नकारात्मक प्रभावों से मुक्ति पाई जा सकती हैं।

अग्नि तत्व के असंतुलन से परिवार के सदस्यों को स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतें, वैवाहिक और आर्थिक परेशानियां हो सकती हैं। इन खतरों को कम करने के लिए अग्नि तत्व को शांत करना आवश्यक होता है। इसके लिए दक्षिण-पूर्व कोण में सरसों के तेल का दिया जलाना चाहिए।

सूर्योदय के समय दक्षिण पूर्व कोण में पूर्व की ओर मुंह करके गायत्री मंत्र का जाप करने से भी लाभ होता है।

मकान के सभी कमरों में इस दिशा को नियंत्रित रखकर मकान के दक्षिण-पूर्व कोण में मौजूद किसी भी वास्तु दोष का निवारण किया जा सकता है। वाशिंग मशीन, फ्रिज आदि को दक्षिण-पूर्व कोण में रखने से भी वास्तु दोष दूर हो सकते हैं।

Director
Vipin sharma

होली की हार्दिक शुभकामनाएं

Director
Mohit Panwar

shreenath®
Travellers Pvt. Ltd.

Head Office :- 9 Kan Nagar , Main Road , Near sub city center , Udaipur (Raj.)

Ph. :-77270-56655 , 77270-59955

Daily parcel service Available

Daily services :- Pune, Mumbai, Vapi, Valsad, Chikli, Navsari, Surat, Ankleshwar, Bharuch, Baroda, Ahmedabad Gandhinagar, Himmatnagar, Junagadh, Jetpur, virpur, Gondal, Rajkot, Ajmer, Jaipur, Jodhpur, Bikaner, Kota

Udaipur :- 3, yatri hotel Udaipole
Ph.:- 77270-59955 , 77270-49955

Nathdwara :- Near Hotel Shree vilas, N.H 8
Ph.:- 77270-28855 , 02953-231333

मनोज दक

Mo. 9414169689

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

DAK PAKESRS & MOVERS ALL OVER INDIA

बांसवाड़ा गोल्डन ट्रांसपोर्ट कं.

नेहरू बाजार, उदयपुर (राज.)

डेली सर्विस : उदयपुर से बांसवाड़ा, सागवाड़ा, परतापुर, सलुम्बर आसपुर, साबला, तलावड़ा, घाटोल, कलिंजरा, बागीदौरा, कुशलगढ़, सज्जनगढ़, पालोदा, आसपुर, बड़गी, चीतरी, गलियाकोट

टाटा समूह आईपीएल का टाइटल स्पॉन्सर

दो नई टीमें, ईशान सबसे महंगे खिलाड़ी

राजवीर

आईपीएल के 2022 संस्करण में अब टाइटल स्पॉन्सर अब चीनी कम्पनी 'वीवो' की जगह भारत का टाटा समूह होगा। जनवरी के दूसरे सप्ताह में नई दिल्ली में संपन्न आईपीएल गवर्निंग काउंसिल की बैठक में यह निर्णय हुआ। मार्च के अंतिम सप्ताह से मई के अंत तक प्रस्तावित आईपीएल के 15वें सत्र के लिए 12-13 फरवरी को बैंगलुरू में खिलाड़ियों की मेगा नीलामी भी संपन्न हो गई। जिसमें 551.07 करोड़ में देशी-विदेशी 204 खिलाड़ी बिके।

नई दिल्ली में गवर्निंग कौंसिल की बैठक के बाद आईपीएल अध्यक्ष बृजेश पटेल ने आगामी सीजन में टाटा समूह के टाइटल स्पॉन्सर होने की पुष्टि की। वीवो के पास आईपीएल के साथ अपनी स्पॉन्सरशिप समझौते के अभी दो साल बाकी थे, लेकिन वह समझौते को जारी रखने के लिए तैयार नहीं था।

वीवो और बीसीसीआई ने 2018 में आईपीएल की टाइटल स्पॉन्सरशिप के लिए 440 करोड़ रुपए का करार किया था, जो आईपीएल 2023 सीजन के बाद समाप्त होना था, लेकिन दोनों पक्ष समय से पहले अलग हो रहे हैं। अब टाटा के पास आईपीएल के 2022 व 2023 सीजन की टाइटल स्पॉन्सरशिप होगा। इससे पहले देश में चीन विरोधी भावना बढ़ने के कारण वीवो ने 2020 में आईपीएल स्पॉन्सरशिप से हाथ खींच लिया था, लेकिन 2021 में उसने मुख्य प्रायोजक के रूप में वापसी की थी, लेकिन अब 2022 के सीजन से पहले उसने इसे पूरी तरह से खत्म करने का फैसला किया है। दूसरी ओर आईपीएल की दो नई टीमों ने लखनऊ और अहमदाबाद को बीसीसीआई की ओर से औपचारिक मंजूरी मिल गई है। लखनऊ टीम के मालिक आरपीएसजी ग्रुप और अहमदाबाद के मालिक सीवीसी कैपिटल को मंजूरी पत्र जारी कर दिए गए है।

गवर्निंग कौंसिल के निर्णय के अनुसार 12-13 फरवरी को बैंगलुरू में सभी 10 टीमों के खिलाड़ियों के लिए मेगा नीलामी भी संपन्न हो चुकी है। दो दिन में 204 खिलाड़ियों की नीलामी हुई। इनमें 137 भारतीय और 67 विदेशी खिलाड़ी रहे। पहले दिन सबसे महंगे बाएं हाथ के विकेटकीपर बल्लेबाज ईशान किशन बिके जिन्हें 15.25 करोड़ में मुंबई ने खरीदा। दूसरे दिन के ऑक्शन में सबसे महंगे लियाम लिविंगस्टन रहे। उन्हें पंजाब किंग्स ने 11.50 करोड़ में अपनी टीम से जोड़ा। दूसरे दिन के ऑक्शन में वो एक मात्र खिलाड़ी थे जिनकी बोली 10 करोड़ से ऊपर गई।

दो दिन तक चले इस ऑक्शन में अनकैप्ट प्लेयर्स पर भी जमकर धनवर्षा हुई। ऑलराउंडर शाहरूख खान और राहुल तेवतिया को 9-9 करोड़ में खरीदा गया। वहीं इस साल चोट के कारण आईपीएल में नहीं खेलने वाले को भी मुंबई इंडियंस ने 2023 के सीजन के लिए अपनी टीम से जोड़ लिया। मुंबई ने सिंगापुर में जन्मे ऑस्ट्रेलियाई पावर हीटर टिम डेविड को भी

अपने टीम के साथ जोड़ा। उन्होंने इस खिलाड़ी पर 8.25 करोड़ रुपए खर्च किए। हालांकि इस टूर्नामेंट में केएल राहुल मैदान पर उतरने वाले सबसे महंगे खिलाड़ी होंगे। उन्हें लखनऊ सुपर जाएंट्स ने 17 करोड़ रुपए में साइन किया है।

राजस्थान के नौ खिलाड़ी

इस आईपीएल में राजस्थान के कुल नौ खिलाड़ी विभिन्न टीमों में चुने गए। राजस्थान के अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खब्बू तेज गेंदबाज खलील अहमद को दिल्ली कैपिटल्स ने 5.26 करोड़ में अपनी टीम में शामिल किया। छोटे गेल के नाम से प्रसिद्ध महिपाल लोमरोर जो गत वर्ष राजस्थान रॉयल्स में शामिल थे पर दिल्ली कैपिटल्स ने 95 लाख रुपए की सफल बोली लगाई। इसके अलावा नवोदित खिलाड़ी अभिजीत तोमर और अशोक शर्मा को कोलकाता नाइटराइडर्स ने क्रमश: 20 और 55 लाख में अपना बनाया। पहले दिन तेज गेंदबाज दीपक चाहर को चेन्नई ने 14 करोड़ खर्च कर फिर से अपनी ही टीम में शामिल किया जबकि उसके चचेरे भाई राहुल चाहर को पंजाब ने 5.25 करोड़ में अपना किंग बनाया। लखनऊ जायंट्स ने दीपक हुड़ा को 5.75 करोड़ में और दिल्ली ने कमलेश नागरकोटी को 1.10 करोड़ में खरीदा। लेग स्पिनर रवि बिश्नोई को नई टीम लखनऊ सुपर जायंट्स ने कप्तान लोकेश राहुल और मार्कस स्टाइनिस के साथ 4 करोड़ में रिटेन किया था।

लखनऊ का पर्स हुआ खाली

नीलामी के बाद नई टीम लखनऊ का पर्स खाली हो गया, जबकि पंजाब के पास सर्वाधिक 3 करोड़ 45 लाख रुपए बचे हैं। चेन्नई के पर्स में 2 करोड़ 95 लाख रुपए अब भी हैं। आरसीबी के पास अब भी एक करोड़ 55 लाख रुपए शेष हैं।

किसके पास कितना पैसा बचा कितने खिलाड़ी खरीदे

टीम	पैसा बाकी करोड़ में	खिलाड़ी खरीदे देसी–विदेशी
पंजाब	3.45	18+7
चेन्नई	2.95	17+8
बेंगलूरू	1.55	14+8
राजस्थान	0.95	16+8
कोलकाता	0.45	17+8
गुजरात	0.15	15+8
मुंबई	0.10	17+8
हैदराबाद	0.10	15+8
दिल्ली	0.10	17+7
लखनऊ	0.00	14+7

Dharmesh Navlakha
Director
94141 66977

Sahil Navlakha
Director
96106 58614

Solitaire Garden & Banquets
A Perfect Wedding Venue

★ Marriage Garden ★ Banquet Hall ★ Decoration & Lighting
★ Catering Service ★ Rooms

Shobhagpura Bypass Road, Shyam Nagar, Pahada, Udaipur, Rajasthan 313001
Mob.: +91 96106 58614, 77427 41351, Email.: solitairegnb@gmail.com

सुंदर, सजीला ही नहीं हरा-भरा भी है पाम

जब घर की सजावट की बात आती है कि तो पाम का नाम सबसे पहले जेहन में आता है। इसकी सुंदरता, हरियाली मन को बेहद भाती है। इसके पौधे हमेशा हरे-भरे रहते हैं। इसे घर के अंदर अथवा बरामदे में रखने के लिए उपयोग में लाया जाता है। इस पौधे की वृद्धि करने की गति बहुत धीमी होती है। इसी वजह से इन्हें लम्बे समय तक गमलों में रखा जा सकता है। पाम के पौधों की लगभग 3000 किस्में पाई जाती हैं। यहां प्रस्तुत है कुछ खास किस्मों की जानकारी

हर्षिता नागदा

एरिका पाम

एरिका पाम का काफी उपयोग किया जाता है। छोटे गार्डन से लेकर बड़े-बड़े होटलों में सजावट के लिहाज से इसका इस्तेमाल किया जाता है। इसकी शाखाएं समूहों में निकलती हैं तथा पत्तियां पतली अथवा कम चौड़ी की होती हैं, जो देखने में सुंदर लगती हैं।

फोनिक्स पाम

इसकी पत्तियां नुकीली व खजूर की पत्तियों के आकार की होती हैं। इस पौधे के नीचे का भाग एक बल्ब के आकार का होता है। यह पौधा जब बड़े आकार का होता है तो इसे जमीन में लगा देना चाहिए। इसकी दो प्रमुख किस्में फोनिक्स रोबीलेनाई तथा फोनिक्स केनारीनसिस है।

यूरोपियन फैन पाम

फैन पाम को कैमीराप्स पाम के नाम से भी जाना जाता है। इसकी पत्तियां पंख के समान खिल जाती हैं, जो बड़ी मनमोहक होती हैं। इसको प्राय: कार्यालयों में सजावट के लिए रखा जाता है।

चाइना पाम

चाइना पाम के तने सख्त होते हैं। इनकी पत्तियां चैड़ी होने के साथ-साथ किनारे से कटी हुई पंखाकार होती है। इनका आकर्षण गजब का होता है। जिस स्थान पर प्रकाश कम होता है, वहां भी इन्हें 6-7 दिनों तक रखा जा सकत ाहै। ये धीरे-धीरे बढ़ते हैं, जिससे कि गमले बदलने की आवश्यकता काफी समय बाद पड़ती है। इसके तने व पत्तियां चारों तरफ फैल जाती है।

रहपिस पाम

रहपिस पाम को आमभाषा में लेडीज पाम बोलते हैं। इनकी पत्तियां हरे रंग की होती हैं। इनकी पत्तियां कम चौड़ी व लंबाई में कई गुना भागों में विभाजित रहती हैं। इनकी दो प्रमुख किम्में हैं, जिनको प्राय: गार्डन में लगाने के लिए उपयोग किया जाता है।

एक्सेल्सा

इसको लेडीज बैंबूपाम के नाम से जाना जाता है। इसके तने लगभग 2.0 से 2.5 सेमी मोटे होते हैं। इनकी प्रत्येक पत्ती में लगभग 4 से 6 सेमी लंबी तथा 4 से 5 सेमी चैड़ी होती है।

यूमिलिस

इसको स्लेंडर लेडीज पाम के नाम से जाना जाता है। इनके तने पतले व लंबाई लगभग 2.0 से 2.5 सेमी तक होती हैं। इन्हें बड़े आकार के गमलों में लगाना ठीक रहता है। रहपिस पाम के पौधों को बीज द्वारा भी तैयार किया जा सकता है। इनकी नई पौध तैयार करने की दूसरी विधि यह है कि इनके जो नए सर्कल्स निकलते हैं, उनको सावधानी से अलग कर लेना चाहिए फिर दूसरे गमले में लगा देना चाहिए। पौधा लगाने के तुरंत बाद पानी अवश्य देना चाहिए। हमारे देश में उपरोक्त पाम के पौधों के अतिरिक्त भी कई अन्य पाम भी पाए जाते हैं जिनको हम जमीन अथवा गमले में आसानी से लगा सकते हैं।

केरियोटा मिटिस पास

इसकी पत्तियां मछली की पूंछ के आकार की होती है। जिनकी वजह से इसको फिश टेल पाम भी कहते हैं। इसकी ऊंचाई लगभग 1.0 से 1.5 मीटर तक होती है। इसके पौधों को बीज द्वारा उगाया जाता है।

हावी पाम

हावी पाम के पौधों को प्राय: रास्ते के आस-पास सजावट में प्रयोग किया जाता है। इसकी ऊंचाई लगभग 1 से 1.5 मीटर होती है। एच.बेलमीसेना तथ एच. फार्सटीराना इसकी दो प्रमुख जातियां हैं। इनके अतिरिक्त माइक्रो कोलम पाम का भी सजावट के लिए उपयोग होता है। इसकी पतली-पतली सुंदर पत्तियां चारों तरफ फैलकर एक छोटे सुंदर वृक्ष का रूप ले लेती हैं। इसके अलावा वाशिंगटोनिया पाम, वाशिंगटोनिया फिलिफेरा व रोबस्टा लिविस्टोना पाम तथा साइकस पाम भी प्रयोग किए जाते हैं। इसे घर के अंदर रखा जाए या बाहर, हर जगह की सुंदरता को बढ़ाते हैं।

Ph. : 0294-2493357, 2493358
2494457, 2494458, 2494459
9829665739, 9680884172
869633357, 8696904457
8696904458, 8696904459

Website : www.shreejproadlines, shreejppackersandmovers

King Of Mini Truck

प्रो. गौतम पटेल
9414471131
8696333358

॥ जय हनुमन्ते नमः॥

श्री **J.P. Roadlines**

प्लॉट नं. 1/200, प्रताप नगर, सुखेर, बाईपास रोड़,
सामुदायिक भवन के पास, प्रताप नगर, उदयपुर (राज.)

B.O. : No. 136, R.K. Puram Vill. Gokul, N.H. 8 Udaipur (Raj.)

सम्पूर्ण भारत के लिए मिनी ट्रक सेवा **TATA, 407, 709, 909, LPT,** केन्टर व आईशर दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, गुजरात एवं ऑल साउथ के लिए डोर टू डोर डिलीवरी के लिए उपलब्ध है।

हठी न बन जाए, आपका बच्चा

क्रोध और झुंझलाहट से बच्चे की जिद पर विजय पा लेंगे तो वस्तुतः ऐसा करना या सोचना ही अभिभावक की सबसे बड़ी पराजय होगी। एक सीमा तक डांट-फटकार तो ठीक है, लेकिन कोशिश यह होनी चाहिए कि बच्चे की जिद को ज्यादा महत्व ही न दें। बच्चे प्रायः समझाने-बुझाने से मान जाते हैं, यदि वे नहीं मानते तो आप भी किसी दूसरे काम में लग जाएं, अपनी भाव भंगिमाओं से सौम्यता का ही प्रदर्शन करें, कठोर न बनें। तब तक बच्चे के मनो-मस्तिष्क पर फिर वही बाल सुलभ निर्मलता छा जाएगी।

कमला शर्मा

बच्चा जब अत्यधिक जिद करता है तब माता-पिता के लिए यह जरूरी हो जाता है कि वे सुलझा हुआ एवं सरल दृष्टिकोण अपनाएं। बच्चे की अनुचित वस्तु पर मचलने की यह आदत आगे चलकर उसे हठी बनाने में सहायक हो सकती है। माता-पिता को चाहिए कि वे उसकी उचित-अनुचित मांगों को पूरा न करके उसे सही-गलत का ज्ञान कराएं। अक्सर माता-पिता किसी वस्तु का विरोध इसलिए करते हैं क्योंकि उन्हें उसमें बुराई दिखाई देती है। माता-पिता के बार-बार हर वस्तु न देने से बच्चे जिद्दी बन जाते हैं। बालक चाहता है कि वह जो कुछ करता है, उसमें हर बार हस्तक्षेप न हो। अत: बच्चे के हर कार्य में हस्तक्षेप न करें, वरन बच्चों का समुचित सहयोग करें।

बच्चों की बार-बार हठ करने की प्रवृत्ति आगे चलकर उनके चरित्र में अनेक अवगुण पैदा कर सकती है। ऐसी स्थिति में बच्चा अवज्ञाकारी हो जाता है। यदि बच्चा कुसंगति से इस बुरी आदत का शिकार हो रहा है तो बच्चे को अच्छी संगति में डालना चाहिए और जिद्दी बच्चों का साथ छुड़ा देना चाहिए।

बचपन की स्वच्छंदता में जिद की प्रवृत्ति

सहज होती है, किंतु अनुचित मांगों की पूर्णता कैसे संभव हो सकती है? तब परिजनों के समक्ष स्थिति में अधिकांश परिजन बच्चों को मारते हैं या उन्हें बहलाने का प्रयत्न करते हैं। ये दोनों बहुत अविवेकी प्रक्रियाएं हैं। पीटने से निर्मल बाल मन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। उनके मानसिक विकास के अवरुद्ध होने की संभावना रहती है। इसके अतिरिक्त बालक में हिंसक प्रवृत्तियों के बलवान होने की आशंका रहती है। मनोवैज्ञानिक अन्वेषणों ने इस बात की पुष्टि की है कि बालक को पीटने से मानसिक पक्ष के दुर्बल होने की संभावना रहती है। अतएव पीटना समस्या का उचित समाधान नहीं है।

बहलाना भी उचित नहीं है। बहलाना अर्थात भ्रमित करना, जो असत्य वृत्तियों का मुख्य कारण है। बहलाने के उपरांत जब बालक को सत्य का ज्ञान होता है तो उसकी जिद पूर्व जिद से कई गुनी हो जाती है, तब स्थिति और जटिल हो जाती है। बच्चा जिद करे और समझाने पर भी न माने तो क्या करना चाहिए? यह एक तत्कालिक समस्या ही नहीं है, बल्कि एक मनोवैज्ञानिक समस्या है। इसके समाधान के लिए धैय और विवेक की आवश्यकता होती है। यदि बच्चे की जिद की किसी विशिष्ट मांग की नहीं है और बड़े सिर्फ बड़प्पन के लिए ही उनकी मांग नहीं मान रहे हैं तो बच्चे पर क्रोध करना तो और भी बुरा है। जिद के दौरान यदि आपने बच्चे को एक सीमा से अधिक डांटा है या मारपीट की है तो आप उसके निर्माल्य का एक अंश चुरा चुके होंगे। बच्चे का निर्माल्य और आपका प्रेम सुरक्षित रहे, इसलिए बच्चे की जिद के आगे आक्रामक बनने से रूकें। हमें या तो मौन ही रहना चाहिए अन्यथा वह बात करनी चाहिए जो मौन से बेहतर हो। हमें बर्फ की तरह होना चाहिए, जो तेज गर्मी से पिघल तो जाती है किंतु शीतलता नहीं त्यागती। बच्चे के शांत होने की प्रतीक्षा करना ही बच्चे की जिद का सर्वश्रेष्ठ उपचार है, भले ही वह प्रतीक्षा थोड़ी लम्बी हो।

कई बार बच्चों से कुछ काम कराना हो या उन्हें छोड़कर कहीं बाहर जाना हो तो यह सोचकर कि चलो, अभी तो पीछा छुड़ाएं और

बच्चों को पैसे या खाने की चीजें दे देते हैं या उनसे कुछ लाने का वादा कर देते हैं और जब वह वादा पूरा नहीं होता तो बच्चा जिद करने लग जाता है, तब वे जिद को हथियार के रूप में अपनाने लगते हैं। यदि उनसे किसी चीज का वादा किया हो तो उसे अवश्य पूरा करें या ऐसा वादा न करें जो पूरा न कर सकें। इससे बच्चों का अभिभावकों पर से विश्वास उठ जाएगा और जिद की प्रवृत्ति बनी ही रहेगी। यदि बच्चा अधिक लाड़ से जिद्दी होता जा रहा है और शिष्टाचार की बातों पर भी ध्यान नहीं देता है और रो-रोकर अपनी हर जिद पूरी कराना चाहता है तब बच्चें को बहलाने की जरूरत है। बच्चों में जिद्दीपन न पनपे, इसके लिए बच्चे में आत्मविश्वास जागृत करना चाहिए। बच्चों को काम करने में पूरा सहयोग दें और उसकी मदद करें। उन्हें मानसिक रूप से तैयार करें लेकिन उन पर हावी मत होइए। उनके काम की प्रशंसा भी कीजिए, जिससे वे प्रोत्साहित हों।

बच्चे को इतना प्यार भी न दें कि वह बहुत जिद्दी हो जाए या इतना कम प्यार भी न दें कि वह डरता रहे। वह यह समझें कि मेरे माता-पिता मुझे प्यार नहीं करते। दोनों का संतुलित समन्वय ही बच्चे को उचित मार्ग पर ले जा सकता है।

बहुत याद आएंगे महाभारत के 'भीम'

लोकप्रिय टेलीविजन धारावाहिक महाभारत के भीम का किरदार निभाने वाले अभिनेता एवं एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाले खिलाड़ी प्रवीण कुमार सोबती ने हृदय गति रूक जाने से 7 फरवरी देर रात को दिल्ली में अशोक विहार स्थित अपने आवास पर अंतिम सांस ली। वे 74 वर्ष के थे। उनके परिवार में पत्नी, बेटी, दो छोटे भाई और एक बहन है।

उन्हें छाती में संक्रमण की समस्या थी। प्रवीण कुमार 20 साल की उम्र में सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) में भर्ती हुए थे। जहां पहली बार उनके एथलेटिक कौशल के लिए उनकी सराहना की गई। इसके बाद प्रवीण ने विभिन्न अंतरराष्ट्रीय एथलेटिक प्रतियोगिताओं में हैमर थ्रो और डिस्कस थ्रो स्पर्धा में देश का प्रतिनिधित्व किया और एशियाई खेलों में चार पदक भी जीतें। प्रवीण ने 1966 और 1970 के एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीता था। उन्होंने 1966 के राष्ट्रमंडल खेलों के दौरान हेमर थ्रो में रजत पदक भी जीता था। निर्माता निर्देशक बीआर चोपड़ा के लोकप्रिय टेलीविजन धारावाहित महाभारत में भीम के किरदार से उन्हें बहुत प्रसिद्धि मिली। महाभारत 1988 में दूरदर्शन पर प्रसारित हुआ था। प्रवीण कुमार ने युद्ध, अधिकार, हुकूमत, शहंशाह, घायल और आज का अर्जुन समेत करीब 50 फिल्मों में काम भी किया था।

उन्होंने 2013 में राजनीति में कदम रखा और आम आदमी पार्टी (आप) में शामिल हो गए। प्रवीण कुमार ने आप के टिकट पर दिल्ली विधानसभा चुनाव भी लड़ा, लेकिन उन्हें भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार से हार का सामना करना पड़ा। इसके बाद 2014 में वे भाजपा में शामिल हो गए।

होली की रसोई

होली पर हमारी दादी-नानी कुछ पारम्परिक व्यंजन बनाती हैं, तो इस होली पर आप भी बनाएं और बच्चों को वैसा ही अहसास और स्वाद दें। आप चाहे तो आज के बच्चों की पसंद के मुताबिक कुछ ट्विस्ट भी डाल सकती हैं। इस तरह...

प्रतिभा अग्निहोत्री

अनारसा

सामग्री– चावल 1/2 किलो, पिसी शक्कर 250 ग्राम, गाढ़ा दही एक कटोरी, खसखस के दाने, तलने के लिए घी।

यूं बनाएं– बनाने से 12 घंटे पूर्व चावल को पानी में भिगो दें। सुबह पानी निकालकर एक सूती कपड़े पर फैला दें। लगभग 6 घंटे बाद इन्हें मिक्सी में बारीक पीस लें। अब पिसे चावल के आटे को दही और शक्कर मिलाकर सख्त गूंथ लें। तीन–चार घंटे के लिए ढककर रख दें। हथेली पर छोटी सी लोई रखकर चपटी करें और खसखस के दाने चिपकाएं। गरम घी में धीमी आंच पर हल्का सुनहरा होने तक तलें। बटर पेपर पर निकालकर सर्व करें।

चीजी अनारसा

इनके अंदर चीज भरें और गरम में ही ऊपर से चीज किसकर सर्व करें।

झार के लड्डू

सामग्री– मोटा बेसन 500–500 ग्राम, तलने के लिए तेल, मीठा सोड़ा 1/4 छोटा चम्मच, गुड़ 500 ग्राम।

यूं बनाएं– बेसन में मीठा सोड़ा डालकर कड़ा गूंध लें। अब गरम तले में सेव बनाने के झारे से मोटे सेव बना लें। गुड़ में कप पानी डालकर तीन तार की गाढ़ी चाशनी बनाएं। अब तैयार सेव को चाशनी में डालकर लड्डू बना लें।

रंगीन लड्डू

आप लड्डू बनाते समय गुलाब कतरी, मूंगफली दाना और किसा नारियल भी डाल सकती हैं।

गुली की गुझिया

सामग्री– आटा–एक कटोरी, मैदा एक कटोरी, घी 250 ग्राम, बारीक कटी मेवा (नारियल, किशमिश, चिरौंजी) एक कटोरी, पिसी शक्कर एक कटोरी।

यूं बनाएं– मैदा में एक बड़ा चम्मच घी डालकर कड़ा गूंथकर सूती गीले कपड़े से ढककर रखें। आटे को कड़ा गूंथ कर मोटा सा परांठा बनाएं। नॉनस्टिक तवे पर घी डालकर धीमी आंच पर सुनहरा होने तक शैलो फ्राई करें। ठंडा होने पर मिक्सी में बारीक पीसकर छलनी से छानें। एक छोटा चम्मच गरम घी में पिसे मिश्रण को भून लें। ठंडा होने पर शक्कर और मेवा मिलाएं। मैदे की छोटी पूड़ी बनाकर भरावन रखकर सांचे में गुझिया बनाएं। गरम घी में सुनहरा होने तक तलें।

चोको गुझिया

वर्तमान समय में गुझिया में गुली के स्थान पर मावा भरा जाने लगा है। आप गुझिया में चोको चिप्स भरकर चॉकलेट सॉस के साथ भी सर्व कर सकती हैं।

बाखर बाड़ी

सामग्री– बेसन एक कटोरी, गेहूं का आटा 1/2 कटोरी, मोयन के लिए तेल, एक छोटा चम्मच, नमक 1/2 छोटा चम्मच, तलने के लिए तेल।
भरावन के लिए – अदरक, लहसुन, हरी मिर्च का पेस्ट एक बड़ा चम्मच, बारीक कटा हरा धनिया 200 ग्राम, नारियल बुरादा एक छोटा चम्मच, नमक 1/2 छोटा चम्मच, टार्टरी एक चुटकी, लाल मिर्च पाउडर 1/4 छोटा चम्मच, तेल एक छोटा चम्मच।
यूं बनाएं– बेसन, आटा, नमक, मोयन मिलाकर कड़ा गूंधें। सूती गीले कपड़े से ढकें। नॉनस्टिक पैन में तेल गरम कर खसखस, तिली भूनें। हरा धनिया, नारियल बुरादा, नमक डालकर तेज आंच पर चलाते हुए भूनें। पानी पूरा सूखने पर शक्कर, टार्टरी, लाल मिर्च डालें। धीमी आंच पर भूनें। गैस बंद कर ठंडा होने दें। बेसन की एक बड़ी सी पतली रोटी बेलें। इस पर अदरक, लहसुन, हरी मिर्च का पेस्ट फैलाएं। इसके ऊपर धनिए का भरावन फैलाकर रोल करें। दोनों किनारे पानी से चिपकाएं। गरम तेल में आधा मिनट तेज आंच पर और फिर मंदी आंच पर सुनहरा होने तक तलें। चाकू से काट कर सर्व करें।

कैसा लगा यह अंक

प्रत्यूष

इस अंक में कौन सा आलेख आपको ज्यादा पसंद आया। आप किन विषयों पर आलेख पढ़ना ज्यादा पसंद करेंगे? किस विषय पर आप हमें अपना मौलिक आलेख, शोध, कविता, कहानी भेजना चाहेंगे। कृपया हमें लिखें। आपके रचनात्मक सुझावों का सदैव स्वागत होगा।

Himmat Jain
Director
9829042297

Ravish Jain
Director
9829273337

Navkar

A House of Designer Sarees, Lehanga - Chunni

134, Dhan Mandi, Teej Ka Chowk,
Udaipur - 313 001 (Raj.)
Ph.: +91-294-2422975, 2524319
GSTIN: 08ABMPJ8551G1ZC

दिनेश गुप्ता
डायरेक्टर
94142 39513

मनीष गुप्ता
डायरेक्टर
98870 08943

मोहित गुप्ता
डायरेक्टर
98871 84032

श्री जी कलेक्शन

जेन्ट्स, लेडिज एवं बच्चों के रेडिमेड कपड़ों के विक्रेता

धानमण्डी चौक, घण्टाघर के सामने,
उदयपुर – 313 001 (राज.)

KARDHAR
ELECTRICALS PVT. LTD.

Various brands accompanying us...

RR KABEL · LITOMATIC · ASTRAL PIPES · ALEMAC · norisys
:hager · Legrand · Schneider Electric · ANCHOR by Panasonic
SKAVA · Lisha · Leon · fumagalli · S&B
iGuzzini · orient electric · Windmill · AO Smith
LARSEN & TOUBRO · BHARTIA CUTLER - HAMMER · NEPTUNE · SIEMENS · FLUA

/ KardharElectricals / kardhar_electricals / KardharE

+91 91166 15580 | kardharelectricalspl@gmail.com | 100 Ft. Road, Near Parmanand Garden, Meera Nagar, Udaipur (Raj.) - 313001

होली की हार्दिक शुभकामनाएं

HOTEL VENKTESH

A Place of Royal Hospitality

For Booking Contact :
098873 88428, 088758 58584

2/5, Dholi Magri, Shivaji Nagar, Nr. Railway Station, Udaipur (Raj.)
Ph. : 0294-2481083, E-mail : hotelvenkteshudr@gmail.com

Happy Holi

Ramesh C. Sharma
B.E. (HONS:) ELECT. MIE, FIV, FIIISLA
Chartered Electrical Safety Engineer

TECHNOMIC ENGINEERS

SURVEYOR & LOSS ASSESSORS

Approved Valuer
Chartered Engineer (India)
Insurance Surveyor &
Loss Adjuster

85-K, Bhupalpura Udaipur - 313 001 (Raj) Ph. : (0294) 2413285, 2427165 (R) 2414101 (O)
Mobile : 9414156285, 9829556285, E-mail: technomic@gmail.com

परिवार की जानवरों जैसी चाल

जानवरों को चार पैरों पर चलते देखना एक सामान्य बात है। मगर कोई इंसान अगर चार पैरों पर चले तो बेशक आपको अजीब लगेगा। मगर एक परिवार के सदस्य जानवरों की तरह चलते हैं। इनके बारे में जानकार वैज्ञानिक भी हैरान हैं। तुर्की के एक छोटे से गांव में अजीबो–गरीब परिवार है। इस परिवार के लोग अपने दो पैरों पर नहीं, बल्कि हाथ–पैर का इस्तेमाल करके चलते हैं। इन्हें देखकर ऐसा लगता है, जैसे हजारों सालों से मानव सभ्यता के विकास का इनके ऊपर कोई असर नहीं पड़ा है। शुरूआती वक्त में तुर्की के वैज्ञानिकों ने इसे बैकवर्ड इवोल्यूशन यानी पीछे जाते हुए इंसानी विकास का नाम दिया। मगर अब वैज्ञानिक इनके बारे में समझ गए हैं। वैज्ञानिकों के मुताबिक परिवार को यूरन टेन सिंड्रोम है।

अलग तरह की बीमारी: रेसिट और हैटिस उलास का परिवार लंबे वक्त तक दुनिया की नजरों से दूर रहा और लोगों को उनके बारे में पता नहीं चला, लेकिन साल 2005 में जब ब्रिटिश वैज्ञानिक ने एक तुर्की प्रोफेसर का अप्रकाशित पेपर देखा तो हैरानी हुई ।इसमें वैज्ञानिक के उलास परिवार के बारे में बात की थी, जो हाथ और पैरों का सहारा लेकर चलता है। उन्होंने दावा किया कि परिवार को यूनर टैन सिंड्रोम है, जिसमें लोग पैर के साथ–साथ हाथों का इस्तेमाल करके भी चलने लगते हैं।(एजेंसी)

दो पैरों पर संतुलन बना पाना मुश्किल होता

बैकवर्ड इवोल्यूशन से शुरू हुई थ्योरी जब यहां तक आई तो वैज्ञानिकों की परिवार के बारे में जानने की रूचि और बढ़ी। तब जाकर पता चला कि हाथ–पैर का इस्तेमाल कर के चलने वाले इस परिवार को जेनेटिक समस्या है। इन सदस्यों को कोजेनेटिल ब्रेन इमपेयरमेंट और सेरिबेलर एंटाक्सिया की दिमागी समस्या है, जिसमें दो पैरों पर संतुलन बना पाना मुश्किल होता है इसलिए ये हाथों का सहारा लेकर भी चलते हैं।

Pushkar Chandaliya

MOTOROLA
WIRELESS SYSTEM

PYROSON ELECTRONICS

Industrial Electronic & Wireless System

G-26, Anand Plaza, University Road, Udaipur (Raj.)
Telefax: 0294-2429633/9414167533
Email: pyrosonudaipur@rediffmail.com
Website: www.pyroson.com

इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

आर्थिक मामले पक्ष में बनेंगे, शेयर, सट्टा, लाटरी से दूर रहें। व्यवसाय एवं नौकरी में सफलता मिलेगी, अति आत्मविश्वास से हानि उठानी पड़ सकती हैं। क्रोध पर नियंत्रण रखें, जीवन साथी से भरपूर सहयोग मिलेगा। संतान पक्ष से तनाव, स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देंवे।

वृषभ

गृहस्थी में परेशानियां संभव, धैर्य एवं संयम से काम लें। योजना के अनुसार ही व्यय करें। नौकरी में मान–सम्मान एवं उच्चाधिकारियों से सम्पर्क बढ़ेगा, लेकिन मानसिक तनाव भी बढ़ सकता है। मित्रों से मनमुटाव, वाहन सावधानी से चलाएं। साझेदारी में फिलहाल कोई काम न करें। परिवार में मांगलिक कार्य संभव।

मिथुन

माह का उत्तरार्द्ध असमंजस पूर्ण रहेगा। सर्दी, जुकाम, बुखार एवं त्वचा संबंधी रोग उभर सकते हैं। तामसिक मनोवृत्ति के कारण कष्ट, परेशानियां होगी। विवाहेत्तर संबंधों से दूर रहें। आर्थिक पक्ष सामान्य, कार्य क्षमता बढ़ाने के प्रयत्न करें।

कर्क

आर्थिक पक्ष को लेकर पूर्णरूप से सतर्कर्ता बरतें। कार्य क्षेत्र में परिवर्तन के प्रयास सफल रहेंगे, अपने वरिष्ठजनों के सहयोग से काम बना लेंगे, जमीन जायदाद को लेकर विवाद, भाई–बहिनों से मनमुटाव की संभावना, माता–पिता का पूर्ण सहयोग, जल्दबाजी में कोई निर्णय न लेंवे। जीवनसाथ से तर्क–वितर्क संभव।

सिंह

अधिक खर्च परेशानियां बढ़ा सकता है। माह का उत्तरार्द्ध आलस्य व अवसाद को बढ़ावा देगा तथा मान–सम्मान में कमी का अनुभव कराएगा। परिश्रम का लाभ कोई और उठा सकता है। वाणी पर संयम रखें। स्वास्थ्य में उतार–चढ़ाव, विरोधी पक्ष का दमन, स्थान परिवर्तन एवं लम्बी दूरी की यात्रा संभव है।

कन्या

संतान पक्ष से शुभ समाचार मिलेंगे, कर्मा में उन्नति से आत्मविश्वास बढ़ेगा। माताजी की सेहत में परेशानी और पारिवारिक जीवन में उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है, नए मित्र बनेंगे। शत्रु पक्ष परास्त होगा। सर्दी जुकाम, बुखार एवं गले की तकलीफ हो सकती है। अपने इष्ट को स्मरण करें।

तुला

भौतिक सुख–सुविधाओं में वृद्धि, व्यापार विस्तार का श्रेष्ठ समय, वरिष्ठजनों का मार्गदर्शन उपयोगी सिद्ध होगा, विदेश यात्रा के भी योग बन सकते हैं। स्वास्थ्य पर ध्यान देना परमाश्यक है। वाणी संयम न होने से जीवन साथ एवं परिवारजनों में क्षोभ पैदा हो सकता है। आय के नए स्रोत प्राप्त होंगे।

इस माह के पर्व/त्योहार

1 मार्च	फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी	महाशिवरात्रि
4 मार्च	फाल्गुन शुक्ल द्वितीय	रामकृष्ण परमहंस जयंती
7 मार्च	फाल्गुन शुक्ल पंचमी	याज्ञवलक्य जयंती
8 मार्च	फाल्गुन शुक्ल षष्टी	अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस
10 मार्च	फाल्गुन शुक्ल अष्टमी	होलाष्टक प्रारंभ
14 मार्च	फाल्गुन शुक्ल एकादशी	रामस्नेही फूल डोल/खाटूश्याम मेला
17 मार्च	फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी	होलिका दहन
18 मार्च	फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा	धुलंडी/छारंडी
22 मार्च	चैत्र कृष्णा पंचमी	श्री रंग पंचमी
24 मार्च	चैत्र कृष्णा सप्तमी	शीतला पूजन
25 मार्च	चैत्र कृष्णा अष्टमी	शीतलाष्टमी पूजा (बासोड़ा)/केशरिया जी मेला
27 मार्च	चैत्र कृष्णा दशमी	दशामाता व्रत
30 मार्च	चैत्र कृष्णा त्रयोदशी	राजस्थान दिवस/रंग तेरस
31 मार्च	चैत्र कृष्णा चतुर्दशी	ज्योति बा फुले जयंती

वृश्चिक

अपने पुरुषार्थ और पराक्रम से जीवन में नये आयाम स्थापित करेंगे। मान–सम्मान एवं राजकीय प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। रूके काम बनेंगे, पारिवारिक सदस्यों का स्वास्थ्य बिगड़ने से खर्च बढ़ेगा। कर्ज भी लेना पड़ सकता हे। भविष्य की योजना में सावधानी बरतें। मानसिक स्थिति को नियंत्रण में रखे।

धनु

माह का पूर्वाद्ध सकारात्मक परिणाम देगा, मान–सम्मान एवं पारितोषिक भी मिल सकता है। किसी भी समस्या को मन में न रखकर परिवारजनों से संवाद करना हितकर रहेगा। व्यापार एवं कार्य क्षेत्र में सकारात्मक रवैया रखें। सहकर्मियों से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

मकर

परिवार में हर्षोल्लास रहेगा, आपके व्यवहार की चहुंओर प्रशंसा होगा, निवेश किया हुआ धन प्राप्त होगा एवं स्थाई कार्यों में परिक्षित होवे, क्रोध की अधिकता रहेगी। पैतृक मामले सुलझेंगे एवं अपने पक्ष में रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहे। वाहनादि सोच–समझ कर प्रयोग करे, निम्नतर लोगों का अच्छा सहयोग प्राप्त होगा

कुम्भ

प्रतियोगी परीक्षाओं में पूर्ण सफलता प्राप्त होगी, विचारों का विरोध संभव है परंतु तटस्थता कामयाबी दिलाएगी। अपने से वरिष्ठजनों की परामर्श से ही कार्य संपादन करें, शरीर के बाएं हिस्से में दर्द संभव, व्यापार, नौकरी, धंधे में सामान्य स्थिति बनी रहेगी। परिवर्तन के योग बनेंगे।

मीन

आय पक्ष सुदृढ होगा, नयी योजनाओं को लेकर आशांवित रहेंगे, परंतु क्रियान्वयन में देरी होगी, अपने सहकर्मी एवं अधिकारी आपके कार्यों की भूरी–भूरी प्रशंसा करेंगे, अगर कोई नौकरी के लिए प्रयासरस है तो मनोरथ पूर्ण होंगे। स्वास्थ्य सामान्य रहगा, स्वभाव में नरमी रखे, क्योंकि कोई बात आपको चुभ सकती है।

लक्ष्यराज सिंह ने बनाए एक दिन में दो गिनीज रिकॉर्ड

उदयपुर। एक घंटे में जरूरतमंदों को दुनिया में सर्वाधिक स्वेटर बांटकर जरूरतमंदों को एक ही दिन में सर्वाधिक भोजन के पैकेट वितरित कर महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन चेरिटेबल ट्रस्ट के ट्रस्टी लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है। मेवाड़ ने इन दो रिकॉर्ड के साथ ही अब तक कुल 6 गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड अपने नाम कर लिए है। उन्होंने 28 जनवरी को जरूरतमंदों को दुनिया में सर्वाधिक स्वेटर बांटकर पांचवां गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड और जरूरतमंदों को एक ही दिन में सर्वाधिक

भोजन के पैकेट वितरण कर छठा गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड अपने नाम किया है। वे इससे पहले सर्वाधिक महिला स्वच्छता प्रोडक्ट्स, वस्त्रदान, स्टेशनरी दान और पर्यावरण संरक्षण के लिए सर्वाधिक पौधे लगाने का विश्व कीर्तिमान स्थापित कर चुके है। मेवाड़ ने बताया कि वर्ल्ड रिकॉर्ड स्थापित करने का उद्देश्य मेवाड़ में रियासतकाल से चली आ रही सेवा और सम्मान की इस परम्परा को आगे बढ़ाते हुए देश-दुनिया में समाज सेवा की अलख जगाना है।

देश का प्रथम क्वालिटी प्रमाणित सेंटर बना अर्थ स्किन एंड फिटनेस

उदयपुर। अर्थ स्किन एंड फिटनेस ने उदयपुर का परचम राष्ट्रीय स्तर पर फहराया और क्लिनिकल कॉस्मेटिक, सौंदर्य व फिटनेस के क्षेत्र में क्वालिटी सर्टिफिकेट हासिल करने वाला भारत का पहला सेंटर होने का गौरव प्राप्त किया। यह प्रमाण पत्र राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय मानकों जैसे कि मशीन क्वालिटी, उपचार क्वालिटी, क्लिनिकल परिणाम, पेशेंट के ठीक होने की दर, पेशेंट सेटिस्फेक्शन, उच्च गुणवत्ता कार्यशैली इत्यादि के आधार पर प्रदान किया गया। संभागीय आयुक्त राजेंद्र भट्ट ने अर्थ स्किन व फिटनेस की मेडिकल टीम को प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए बधाई दी। यह प्रमाण पत्र अर्थ पर क्लिनिकल कॉस्मेटिक व फिटनेस के क्षेत्र में प्रदान की जाने वाली समस्त सेवाओं पर दिया गया, जैसे कि मेडिकल फेशियल, लेजर हेयर रिमूवल, मोटापा कम करना, चेहरे की झुर्रियां हटाना, मुहांसे, मुहांसों के दाग, फेस पिग्मेंट, एंटी एजिंग, फेस एस्थेटिक्स, लिप शेपिंग आदि पर क्वालिटी प्रमाणित किया गया है। इसके पहले भी अर्थ को क्वालिटी हेतु अंतरराष्ट्रीय प्रशंसा पत्र प्राप्त हो चुका है और सेंटर ऑफ एक्सीलेंस का दर्जा मिला हुआ है। अर्थ के सीईओ डॉ. अरविंदरसिंह, निदेशक डॉ. राजेन्द्र कच्छावा तथा डॉ. दीपासिंह ने बताया कि अर्थ क्वालिटी के लिए प्रतिबद्ध है और शीघ्र ही जयपुर में भी स्किन व फिटनेस की सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएगी।

डीपी ज्वेलर्स का बांसवाड़ा में शुभारंभ

बांसवाड़ा। 81 वर्षों से प्रख्यात रतलाम के डीपी ज्वेलर्स के महाराणा प्रताप चौराहा बांसवा में भव्य नव शृंगारित शोरूम का शुभारंभ गत दिनों केबिनेट मंत्री महेंद्रजीत सिंह मालवीया, कलक्टर अंकित कुमार, नगर परिषद सभापति जैनेंद्र त्रिवेदी, जीजीटीयू कुलपति आईवी त्रिवेदी एवं एडीएम नरेश बुनकर ने किया। इस अवसर पर डीपी ज्वेलर्स से रतनलाल कटारिया, अनिल कटारिया, विकास कटारिया, पुनीत पिरोदिया व परिवार के अन्य सदस्य अनोखीलाल कटारिया, कांतिलाल कटारिया व मदनलाल कटारिया भी उपस्थित थे। मैनेंजिंग डायरेक्टर विकास कटारिया ने बताया कि 1940 में शुद्धता की नींव पर डीपी ज्वेलर्स ने जैसी शुरुआत की थी, वह आज भी कायम है। हमारा विश्वास ग्राहकों को सही कीमत पर पूर्ण शुद्धता देना था। यही कारण है कि आज भी डीपी ज्वेलर्स पर आभूषण की खरीदी का भरोसा है, क्योंकि उन्हें यहा की शुद्धता और पारदर्शिता पर पूर्ण विश्वास है।

जय गोलछा बने सीए

उदयपुर। सीए सागर गोलछा के पुत्र जय गोलछा के चार्टर्ड एकाउंटेंट बनने पर सागर गोलछा एण्ड कम्पनी ने उन्हें बधाई दी है। वे अपनी सफलता का श्रेय पिता सागर व माता रंजना गोलछा को देते हैं।

कैलेंडर का विमोचन

उदयपुर। धानमंडी स्थित जानकी रायजी मंदिर में माहेश्वरी समाज का कैलेंडर का विमोचन किया गया। कैलेंडर में माहेश्वरी सेवा समिति धानमण्डी पंचायत के सभी सदस्यों की जानकारी सम्मिलित की गई है। कार्यक्रम में पं. ख्यालीलाल आमेटा माहेश्वरी पंचायत धानमण्डी के संरक्षक द्वारकाप्रसाद सोमानी, माहेश्वर पंचायत शहर के अध्यक्ष जानकीलाल मूंदड़ा, धानमंडी पंचायत के अध्यक्ष राधेश्याम तोषनीवाल, पंचायत के सचिव डॉ. बसंतीलाल बाहेती, कोषाध्यक्ष सुरेश तोषनीवाल, महेश सेवा समिति हिरणमगरी के अध्यक्ष श्यामलाल सोमानी, महेश सेवा संस्थान के सचिव बालमुकुंद मंडोवरा, माहेश्वरी युवा संगठन धानमंडी के अध्यक्ष मयंक मूंदड़ा, महिला संगठन की अध्यक्ष सुशीला जागेटिया उपस्थित थी।

डॉ. बसंल को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड

उदयपुर। इंडिया एसोसिएशन ऑफ डर्मेटोलॉजिस्ट, वीनेरियोलोजिस्ट एंड लप्रोलोजी विशेषज्ञों की गत दिनों जैसलमेर में हुई आईडीवीएल कांफ्रेंस में उदयपुर के वरिष्ठ चर्मरोग विशेषज्ञ डॉ. निर्मल बंसल को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से नवाजा गया। डॉ. बंसल को यह अवार्ड उनके क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय कार्यों के लिए दिया गया। डॉ. बंसल एमबी हॉस्पिटल के पूर्व चर्मरोग विभागाध्यक्ष भी रह चुके हैं।

जैन राष्ट्रीय सदस्य मनोनीत

उदयपुर। सम्मेद शिखर तीर्थ की राष्ट्रीय समन्वय समिति में उदयपुर के कुंतीलाल जैन को शामिल किया गया। राष्ट्रीय स्तर की समन्वय समिति जिसमें दिगम्बर एवं श्वेताम्बर समाज के देशभर से 51 सदस्यों की नियुक्ति की गई है। इसमें प्रदेश से जयपुर, उदयपुर एवं बांसवाड़ा से एक-एक प्रतिनिधि को लिया है।

वनवासी गांव नाल पहुंची नारायण सेवा

उदयपुर। पीड़ितों और शोषितों की सेवा में सतत समर्पित नारायण सेवा संस्थान द्वारा गोगुंदा पंचायत समिति के ग्राम पंचायत नाल के नाथिया थल गांव मं अन्नदान, वस्त्रदान, शिक्षा एवं चिकित्सा सहायता शिविर का आयोजन हुआ। शिविर में वंचित एवं वनवासी वर्ग के बच्चों, पुरुषों और महिलाओं को विभिन्न तरह की मदद सामग्री देते हुए उन्होंने स्वास्थ्य शिक्षा एवं स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि कुपोषित निर्धन, विधवा एवं मजदूर परिवार की करीब 350 माताओं को 15 क्विंटल मक्का, 300 कम्बल, 200 जोड़ी चप्पल, 250 लुगडी, 150 पुरुषों को धोती, 5 स्टीक, 3 वॉकर, 2 वैशाखी वृद्ध एवं दिव्यांगों को दी गई। वहीं मेले कुचले करीब 400 आदिवासी बच्चों के नाखून-बाल काटकर मंजन करवाया व नहलाया। 250-250 अंडर वियर बनियान, नए कपड़े पेंट-शर्ट-टीशर्ट पहनाए गए और 200 टूथ पेस्ट ब्रश साबुन, बिस्किट और स्वेटर बांटे गए। बच्चों को मैल व गंदगी से होने वाले रोगों से भी जागरूक किया। डॉ. राजन जैन ने शिविर में 125 रोगियों की जांच की और मौसमी बीमारी सर्दी-जुकाम, दर्द, खुजली व एलर्जी की नि:शुल्क दवाइयां दी।

डॉ. धींग को जिनवाणी लेखक सम्मान

उदयपुर। अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र के निदेशक साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग को पांचवी बार जिनवाणी लेखक सम्मान प्रदान किया जाएगा। यह सम्मान सम्यकज्ञान प्रचारक मंडल, जयपुर की ओर से मासिक पत्रिका जिनवाणी में प्रकाशित रचनाओं के आधार पर दिया जाता है। श्रेष्ठ सृजन हेतु पूर्व में डॉ. धींग को चार बार यह सम्मान मिला है। इस बार सतत साहित्य सृजन हेतु उन्हें चुना गया। उन्हें 11 हजार की सम्मान राशि और सम्मान पत्र से सम्मानित किया जाएगा। सम्पादक डॉ. धर्मचंद जैन ने बताया कि जिनवाणी पिछले 80 वर्षों से निरंतर प्रकाशित हो रही है। डॉ. धींग जैन विद्या विषय के सर्वाधिक लोकप्रिय बहुपठित साहित्यकार है।

उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम

उदयपुर। सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान, ाारत सरकार और फैडरेशन ऑफ राजस्थान ट्रेड एण्ड इंडस्ट्री के तत्वावधान में गत दिनों उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम हुआ। फोर्टी के को-चैयरमेन प्रवीण सुथार ने उदयपुर के टेक्नो एनजेआर कॉलेज में हुए कार्यक्रम में कहा कि कोई भी उद्योग प्रारंभ से बड़ा नहीं होता है। उसकी शुरूआत छोटे स्तर से होती है और वहीं बड़े उद्योग का रूप लेता है। जयपुर से एमएसएमई के असिस्टेंट डायरेक्टर संजय मीणा ने नए उद्यमी को मोटिवेट करने के लिए केन्द्र सरकार के नियमों की जानकारी दी। जिला उद्योग केन्द्र उदयपुर के उद्योग प्रसार अधिकारी चोखाराम मेघवाल, कॉलेज के निदेशक आरएस व्यास, मनीष भानावत आदि मौजूद थे।

बच्चे ने निगला बल्ब, ऑपरेशन कर बचाई जान

उदयपुर। पाली जिले के 8 वर्षीय बच्चे ने खेल-खेल में खिलौने से लगने वाले एलईडी बल्ब को निगल लिया। यह बल्ब बच्चे की सांस नली में अटक गया। जिससे बच्चे को लगातार खांसी और सीने में दर्द होने लगा। इस पर परिजनों ने बच्चे को पीएमसीएच में दिखाया। ईएनटी विशेषज्ञ डॉ. शिव कौशिक ने बताया कि एक्सरे में यह सामने आया कि बच्चे के सांस नली और फेफड़े के बीच कोई चीज फंसी हुई थी, जिस वहज से उसे इतनी तकलीफ हो रही थी। टीम ने बिना समय गवाएं दूरबीन से सफलतापूर्वक ऑपरेशन किया।

केके गुप्ता और डॉ. शास्त्री प्रदेश संयोजक मनोनीत

के के गुप्ता

जिनेन्द्र शास्त्री

उदयपुर। भाजपा राजस्थान प्रदेश के अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया ने विभिन्न विभागों में प्रदेश स्तरीय संयोजक एवं सहसंयोजक मनोनीत किए। स्वच्छ भारत अभियान के प्रदेश संयोजक के रूप में डूंगरपुर के पूर्व सभापति एवं स्वच्छता अभियान राजस्थान के पूर्व ब्रांड एंबेसडर केके गुप्ता और डॉ. जिनेन्द्र शास्त्री को प्रदेश के आपदा राहत, सहयोग विभाग के प्रदेश संयोजक के पद पर मनोनीत किया है।

उपलब्ध होंगे फाइबर गैस सिलेंडर

उदयपुर। इंडियर ऑयल कॉर्पोरेशन ने घरेलू गैस के फाइबर निर्मित सिलेंडर उपभोक्ताओं के लिए उपलब्ध करवाए है। ये वर्तमान में 5 और 10 किलो वजन में उपलब्ध है। उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा ने इस सिलेंडरों की लॉचिंग की। इस अवसर पर अंबामाता गैस सर्विस से डॉ. सुनील जोशी, मुकेश गैस से मुकेश दुमाला, इंडियन ऑयल के मैनेजर मनोज मीणा आदि उपस्थित थे।

नाहर अध्यक्ष व जिंदल महामंत्री निर्वाचित

अनिल नाहर

केएम जिंदल

उदयपुर। उदयपुर जिला वैश्य महासम्मेलन के चुनाव में अनिल नाहर अध्यक्ष एवं केएम जिंदल महामंत्री मनोनीत हुए। अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक अग्रवाल ने बताया कि प्रकाश चेचानी कोषाध्यक्ष, के.के. गुप्ता प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष, अनिल नाहर प्रदेश संभागीय कार्यकारी अध्यक्ष का अतिरिक्त प्रभार, ओमप्रकाश अग्रवाल प्रदेश उपाध्यक्ष, के.जी. मूंदड़ा प्रदेश मंत्री मनोनीत हुए।

कलाल बने एमपीयूएटी रजिस्ट्रार

उदयपुर। राजस्थान प्रशासनिक सेवा के वर्ष 2011 बैच के अधिकारी मुकेश कलाल ने महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलसचिव कार्यालय में रजिस्ट्रार का पदभार संभाला। उन्होंने कुलपति प्रो. नरेन्द्रसिंह राठौड़ से शिष्टाचार भेंट की और विश्वविद्यालय से संबंधित विभिन्न विषयों पर विस्तार से चर्चा की। अधिकारियों और छात्र नेताओं व विद्यार्थियों ने कलाल का मेवाड़ी पाग व उपरना पहना कर स्वागत किया।

शैलेन्द्र दशोरा मुख्य पोस्टमास्टर जनरल बने

उदयपुर। भारतीय डाक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी शैलेन्द्र दशोरा ने राजस्थान डाक परिमंडल के मुख्य पोस्ट मास्टर का पदभार संभाला। उदयपुर जिले के दशोरा जम्मू एवं कश्मीर के मुख्य पोस्ट मास्टर के पद से स्थानांतरित होकर राजस्थान आए हैं। उल्लेखनीय है कि दशोरा जोधपुर व अजमेर में डाक सेवा निदेशक के पद पर अपनी सेवाएं दे चुके हैं इसके अलावा वे वर्ष 2009 से 2014 तक पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर निदेशक का पदभार संभाल चुके हैं।

सेठी का अभिनंदन

उदयपुर। प्रमुख वास्तुविद् मुंबई के सम्पत सेठी का पिछले दिनों पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव के दौरान अभिनंदन कर उन्हें वास्तु आचार्य अलंकरण प्रदान किया गया। दिगम्बर जैन समाज संतोष नगर उदयपुर द्वारा प्रदत्त प्रशस्ति पत्र में उन्हें देश का प्रमुख वास्तुविद् बताया गया है। उदयपुर के वासु पूज्य दिगम्बर जिन मंदिर में भी उनका वास्तु निर्देशन रहा।

विजय वर्मा को डॉ. कोमल कोठारी स्मृति अवार्ड

उदयपुर। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक कला केन्द्र की ओर से प्रदत्त किया जाने वाला प्रतिष्ठि डॉ. कोमल कोठारी स्मृति लाइफ टाइम अचीवमेंट लोक कला पुरस्कार लोककला मर्मज्ञ विजय वर्मा को प्रदान किया गया। यह पुरस्कार बुधवार को राज्यपाल कलराज मिश्र के निर्देशानुसार प्रमुख सचिव सुबीर कुमार एवं पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र की निदेशक किरण सोनी गुप्ता ने स्वास्थ्य कारणों से वर्मा के निवास स्थान पर जाकर प्रदान किया।

मेजर झाला का सम्मान

उदयपुर। सेना में अपने 12 वर्ष की सेवा के दौरान कश्मीर सहित देश के विभिन्न इलाकों में आतंकवादियों के खिलाफ किए गए 7 ऑपरेशन में 14 आतंकवादियों को मार गिराने वाले मूलत: कैलाशपुरी स्थित झाला का गुड़ा निवासी भरतसिंह झाला को रोटरी क्लब सूर्या की ओर से सम्मानित किया गया। समारोह में क्लब अध्यक्ष पुनीत सक्सेना, सचिव विक्रांत शाकद्वीपी ने मेजर झाला को उपरना ओढ़ाकर, स्मृति चिह्न एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यक्रम में मेजर झाला ने विभिन्न ऑपरेशन्स के दौरान हुए अनुभव सुनाए।

खान निदेशक को बताई टीपी संबंधी समस्याएं

उदयपुर। ऑल उदयपुर मिनरल प्रोसेसर्स के प्रतिनिधिमंडल ने खान एव भू विज्ञान निदेशक को ज्ञापन सौंप कर व्यापार संचालन एवं तैयार माल के परिवहन में टीपी को लेकर आ रही व्यावहारिक समस्याओं से अवगत करवाते हुए राहत दिलाने की मांग की। ऑल उदयपुर मिनरल प्रोसेसर्स के प्रतिनिधि प्रवीण सुाीर, गोपाल अग्रवाल, गिरीश भगत, राजेन्द्र पुरोहित, संजय खेतान, सुरेश जैन, अशोक ओझा, ओपी ने नागदा ने इस मौके पर टीपी के लिए विरोध जताते हुए कहा कि मिनरल पाउडर उद्योग पर तीन साल के लागू टीपी व्यवस्था निहायत ही असंगत और अव्यावहारिक सिद्ध हुई है। कोविड और आर्थिक मंदी की मार झेल रहे इस डेड उद्योग पर इस नियम का अत्यंत ही नकारात्मक असर हुआ है। उन्होंने मिनरल पावर उद्योग से टीपी व्यवस्था हटाने की मांग की।

चित्तौड़ा को माइक्रो बाइंडिंग अवार्ड

उदयपुर। सूक्ष्मतम पुस्तिकाओं के शिल्पकार चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा को माइक्रो बाइंडिंग बुक्स के लिए ग्रेट विनर वर्ल्ड रिकॉर्ड द्वारा जारी प्रमाण पत्र गत दिनों संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट ने प्रदान किया। चित्तौड़ा ने बताया कि वे पिछले 19 वर्ष से इस कला से संबद्ध हैं।

उदयपुर: शोक समाचार

उदयपुर। श्री राजेन्द्रकुमार जी मंत्री (जय गणेश ट्रेडिंग कं.) का 13 जनवरी को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोक विह्वल धर्मपत्नी श्रीमती सीता मंत्री, पुत्र शोभित व हेमंत, पुत्री श्रीमती दीपिक्षा नुवाल व भाई-भतीजों का वृहद परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती मोहनदेवी बाफना धर्मपत्नी स्व. भंवरलाल जी बाफना मिर्चीवाला का 25 जनवरी को देहांत हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पुत्र मोहनलाल, बसंतीलाल, ललितकुमार, गणपतलाल, पुत्री कमलादेवी कोठारी व पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। राजस्थान विश्वविद्यालय की पूर्व प्रोफेसर डॉ. रंजना अग्रवाल का 1 जनवरी को जयपुर में देहांत हो गया। वे 74 वर्ष की थीं। उनके उदयपुर स्थित परिवार में भाई-भाभी अशोक-मीनाक्षी अग्रवाल सहित रिश्तदारों व मित्रों ने हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की।

उदयपुर। श्रीमती कंचन देवी जी बाबेल (धर्मपत्नी श्री केसरसिंह जी बाबेल) का 4 फरवरी को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त पति, पुत्रवधु मधु (स्व. रमेशजी बाबेल), भतीजे नरेन्द्र, भूपेन्द्र बाबेल, पौत्र अंशुल व आयुष तथा पुत्री आशा सेवन्तरा सहित भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्री भगवतीलाल जी सरूपरिया का 15 जनवरी को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती शांतिदेवी, पुत्र निर्मल व डॉ. मनीष सरूपरियर, पुत्रियां मंजू सिंघवी, उषा मारू, युवराज बुरड़, हेमलता कटारिया, नमिता नलवाया व भाई-भतीजों का विशाल परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती निर्मला नागदा सुपुत्री स्व. श्री वृद्धिशंकर जी शर्मा हितैषी का 28 जनवरी को आकस्मिक निधन हो गया। वे हिंदुस्तान जिंक लि., दरीबा (नर्सिंग स्टाफ) से सेवानिवृत्त थीं। वे अपने पीछे शोकाकुल पति श्री श्रीलालजी नागदा पुत्र-पुत्रवधू रमेश-हेमलता, हेमेन्द्र-भागवंती, पुत्री-दामाद जयश्री (न्यूज एंकर)-विपिनजी नागदा सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र तथा भाई-भतीजों का वृहद व संपन्न परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। बेदला के पूर्व सरपंच श्री बंशीलाल जी कुम्हार के पुत्र गौरव प्रजापत का 30 जनवरी को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पिता, माता मोती देवी, पत्नी सोनू देवी, पुत्र कान्हा प्रजापत सहित भाई-बहिनों व भतीजों का समृद्ध व संपन्न परिवार छोड़ गए हैं। गौरव विद्या भवन रूरल इंस्टीट्यूट के पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष थे। उनके निधन पर सामाजिक संगठनों व राजनैतिक दलों के नेताओं-कार्यकर्ताओं ने गहरा शोक व्यक्त किया।

उदयपुर। दैनिक राष्ट्रदूत के समाचार प्रभारी श्री रफीक खान पठान के पिताश्री अनार मोहम्मद जी का 22 जनवरी को आकस्मिक निधन हो गया। वे रेलवे से सेवानिवृत्त थे। वे रफीक पठान सहित शोकाकुल पांच पुत्र एवं दो पुत्रियों व उनके भरे-पूरे परिवार को छोड़ गए हैं। उनके निधन पर पत्रकारों ने गहरा शोक व्यक्त किया। प्रत्यूष कार्यालय में श्रद्धांजलि सभा भी हुई।

उदयपुर। समाजसेवी श्री लक्ष्मीलाल जी डवारा (नवानिया) का देह परिवर्तन 31 जनवरी को हो गया। वे अपनी पीछे शोक संतप्त पुत्र अशोक, दिनेश, पुत्रियां श्रीमती विमला धर्मावत, कमला लालावत, किरण कोठारी, सुमन कंठालिया व ममता पचोरी सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

फतहनगर। श्री मनोहरलाल जी धन्नावत नवानिया वाला का 1 फरवरी को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रकांता जी, पुत्र ओमप्रकाश व महेश धन्नावत तथा पौत्र-पौत्रियों का वृहद व संपन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। संघवी श्री राजेन्द्र जी सिंघटवाड़िया (राज ज्वेलर्स) का 29 जनवरी को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त धर्मपत्नी श्रीमती कांताजी, पुत्र अभिषेक, पुत्री पायल पोरवाल सहित पौत्र-दोहित्र का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती सरला उपाध्याय धर्मपत्नी श्री राजेश जी उपध्याय का 29 जनवरी को देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पति, सासुमां श्रीमती शांतिदेवी, पुत्र अखिल, पुत्री श्रीमती अंशु पांडे व कुमुद सहित भाई-भतीजों, देवर-देवरानियों का संपन्न व समृद्ध परिवार छोड़ गई हैं।

भारत में फैलता ड्रग्स का मायाजाल

रघुवीर चारण

देश में ड्रग्स यानी नशीले मादक पदार्थों का बाजार एक बार फिर गरमा गया। पिछले दिनों में मुंबई में गोवा की तरफ जाने वाले क्रूज में रेव पार्टी करते हुए बॉलीवुड के मशहूर अभिनेता के बेटे को गिरफ्तार किया। बॉलीवुडऔर ड्रग्स का काफी पुराना नाता रहा है।

ड्रग्स (गांजा, चरस, अफीम, हेरोइन) का सेवन आज के युवा वर्ग में ग्लैमरस बन गया है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारत अब ड्रग्स व्यापार तथा तस्करी का केन्द्र बिंदु बन चुका है। भारत में ड्रग्स की बड़ी मात्रा में जो खेप आती है, वो हमारे पड़ोसी देशों से आती है, जिसमें म्यांमार, पाकिस्तान और अफगानिस्तान शामिल हैं। ईरान, अफगानिस्तान और पाकिस्तान को गोल्डन क्रेसेंट कहा जाता है। भौगोलिक रूप से देखें तो हमारा देश इनके मध्य में स्थित है। विश्व में सर्वाधिक हेरोइन का उत्पादन अफगानिस्तान में होता है।

नवीनतम वैश्विक अनुमानों के अनुसार 15-64 वर्ष आयु के बीच लगभग 5.5 प्रतिशत लोग ऐसे हैं, जिन्होंने बीते साल कम से कम एक बार ड्रग्स का उपयोग किया। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया में साल 2009 से 21 करोड़ लोग ड्रग्स से पीड़ित थे, 2018 में यह आंकड़ा बढ़कर 27 करोड़ हो गया। विकासशील राष्ट्रों की तुलना में विकसित देशों में यह आंकड़ा ज्यादा देखा गया।

संयुक्त राष्ट्र ड्रग्स क्राइम द्वारा जारी विश्व ड्रग्स रिपोर्ट 2021 के अनुसार पिछले साल लगभग 27 करोड़ लोग ग्लोबली ड्रग्स का सेवन करते हैं, उनमें से 3 करोड़ डिसॉर्डर से पीड़ित हैं। कोविड 19 महामारी के दौरान काफी देशों में कैनाबिस (भांग, गांजा) की मांग बढ़ गई। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इंजेक्टेड ड्रग्स के प्रयोग से 1 करोड़ लोग हिपेटिटिस सी रोग से ग्रसित हैं। भारत में 13 प्रतिशत लोग ड्रग्स डिसॉर्डर से पीड़ित हैं। हमारे देश में तीन प्रमुख राज्य पंजाब, मिजोरम और मणिपुर सर्वाधिक प्रभावित है। एनसीआरबी सर्वे के अनुसार देश में प्रतिवर्ष सात हजार 800 मौतें ड्रग्स के ओवरडोज से होती हैं यानी रोज 21

मौत नशीलें मादक द्रव्यों के सेवन से हो रही हैं। भारत के लगभग तीन करोड़ लोग गांजा व 2.5 करोड़ लोग अफीम का प्रयोग करते हैं। अफीम की खेती मुख्यत: राजस्थान व हिमाचल में होती है। हमारे देश में ज्यादातर ड्रग्स सीमा पार से आती हैं। अभी कुछ सालों में बॉर्डर एरिया में अवैध तस्करी के कई मामले दर्ज किए गए, जिसमें पाकिस्तान से आने वाली हेरोइन की बड़ी खेप बरामद की गई। कुछ दिन पूर्व गुजरात के मुंदरा पोर्ट पर भारी मात्रा में ड्रग्स पकड़ी गई। जिसकी कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में 9 हजार करोड़ आंकी गई इनके संबंध ईरान से मिले।

भारत के महानगरों में रेव पार्टी के नाम बड़ी मात्रा में ड्रग्स परोसा जाता है। जिसका कुप्रभाव हमारे समाज व युवा वर्ग पर पड़ा। युवाओं द्वारा नशीले मादक पदार्थों का अत्यधिक सेवन उनके मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य पर बुरा असर डाल रहे हैं, जिससे कम उम के युवाओं द्वारा मानसिक प्रताड़ना आत्महत्या घरेलू हिंसा के मामले बड़ी संख्या में सामने आ रहे हैं। नशे के ओवरडोज से हृदय रोग, एचआईवी, मानसिक विकास होते हैं। भारत में दर्द निवारक मेडिसिन ट्रामाडोल का दुष्प्रयोग नशे के रूप में बहुत हो रहा है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 47 के अंतर्गत राज्य, अपने लोगों के पोषाहार स्तर और जीवन स्तर को ऊंचा करने और लोक स्वास्थ्य के सुधार को अपने प्राथमिक कर्तव्यों में मानेगा और राज्य, विशिष्टतया, मादक पेयों और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक औषधियों के, औषधीय प्रयोजनों से भिन्न, उपभोग का प्रतिषेध करने का प्रयास करेगा। परंतु राज्य सरकारों द्वारा नशा मुक्ति अभियान के अलावा कुछ खास काम नहीं हुए। हमारे देश में ड्रग्स का हब पंजाब, मिजोरम, गोवा और हिमाचल जैसे राज्यों में वहां के नारकोटिक्स विभाग द्वारा नाम मात्र की कार्यवाही होती है।

देश में 1985 में नशीले मादक पदार्थों पर नियंत्रण के लिए कानून बनाया गया। एनडीपीएल एक्ट 1985 जिसके अंतर्गत अफीम की खेती बिना लाइसेंस के प्रतिबंधित है और नशीले मादक पदार्थों की अवैध तस्करी व सेवन करने पर 20 वर्ष तक जेल हो सकती है।

आखिरकार इस विकट समस्या का यही हल है कि हमें राष्ट्रीय स्तर पर नशे के खिलाफ जागरूकता अभियान चलाने चाहिए। युवा वर्ग व ग्रामीण क्षेत्रों में इसके हानिकारक प्रभाव से अवगत कराना होगा। नशीले पदार्थों के सेवन, उसकी अवैध तस्करी करने वालों के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई करनी होगी। साथ ही ड्रग्स डीलरों व व्यापारियों को निष्क्रिय करना होगा।

Hotel Yois & Hotel Howard Johnson

A Unit of Bhavgeet Hotel & Motel Pvt. Ltd.

Elegant

Multi-Functional Hall

The Occasion

Wedding & Special Events

Silver Spoon

Multi-cuisine Restaurant ■ Pure Veg.

The Regal

Multi-Functional Garden

Plot No.8 Nr. Mahila Police Thana, 100 FEET Road, Roop Nagar Bhuwana,
Opp. The Occasion Wedding & Special Event Garden,
Udaipur 313001 Rajasthan, India.
Contact : 8239466888, 823966888, 9828596555
email: hotelambienceudaipur@gmail.com website: www.hotelyois.com

ANUSHKA ACADEMY

Join Today For Sure Success

सर्वाधिक चयन देने वाला राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ शिक्षण संस्थान

UPSC | **CLAT**

IAS | IPS | IFS | IRS | IrTS

BANK (PO | CLERK) | **SSC**

RBI | SBI | IBPS | CGL | CHSL | CPO

BENEFITS

- EXPERIENCED FACULTIES
- GUIDANCE FROM RTD. IAS OFFICER
- TOPIC WISE CLASS NOTES & PRACTICE SHEETS
- LIBRARY FACILITY
- SPECIAL DOUBT CLASSES
- MONTHLY CURRENT AFFAIRS MAGAZINES
- SUNDAY SPECIAL CLASS

Sanitization | Face Mask | Temperature Check | Social Distancing

SUBHASH NAGAR
Near Dalal Petrol Pump, Udaipur.(Raj.)

CALL NOW
8233223322 / 7742443456

Subhash Nagar, Near Dalal Petrol Pump, Udaipur (Raj.)

ARAVALI
GROUP - INDIA

AN ISO 9001:2008
Certified co.

Aravali Minerals & Chemical Industries Pvt. Ltd.

Quarry Owner, Processor, Exporter and Supplier of Indian Onyx, Marbles, Granites & other Natural Stones from Udaipur

MINERAL STONE CONSTRUCTION

- A wonder of nature- the Onyx Marble of Aravali, is most sought after by Architects and Master builders from all over the world for its distinct creamy white and subtle pink colors embellished with nature's own patterns.
- Aravali Onyx, with its fine grain texture and translucency, symbolises supreme luxury, extreme sensitivity and a high degree of aesthetics.
- Aravali Minerals & Chemical Industries is proud to uncover and present before connoisseurs across the globe, this dplendour of nature.

6 Continents 36 Countries, More then 400 Customers

B-132, Mewar Industrial Area, Madri, Udaipur-313003
Tel: 2490675, 2491357, 2491675
OFFICE:SP-1, Udhyog Vihar, Sukher, Udaipur-313003
E-mail: aravali.sunil@yahoo.com, aravali1975@gmail.com
Website: www.aravalionyx.com

अर्थ
स्किन और फिटनेस

Center of Excellence

Certified QUALITY

उत्तरी भारत का पहला क्वालिटी प्रमाणित एवं लार्ज सेन्टर ऑफ एक्सीलेन्स

फैट टू फिट

- फैट लोस
- स्कीन टाईटनिंग
- बॉडी कंटूरिंग
- फेस कंटूरिंग
- मेडिकल फेशियल

लेजर की अत्याधुनिक तकनीक, रेडियो फ्रीक्वेन्सी के साथ अल्ट्रासाउण्ड लिपोलिसिस

बिना सर्जरी व साईड ईफेक्ट

Prebook Appointment Call **85598 55945**

तीसरी मंजिल, 4 सी अर्थ बिल्डिंग, मधुबन, उदयपुर (राजस्थान)